



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

प्रथम अर्ध वार्षिक पत्रिका-वर्ष 2025-26

20वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग - 793001



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2024 के शुभ अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय मुख्य अतिथि डा. फिल्मेका मारबनियांग महोदया का खासी शॉल से स्वागत करते हुए।

स्वागत संबोधन प्रस्तुत करते हुए श्री मैथ्यूज मैथ्यू, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय।



कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 19वें अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय, मुख्य अतिथि महोदया एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय



नवीन पूर्वांचल संदेश

प्रथम अर्ध वार्षिक पत्रिका - वर्ष 2025 - 26

20वां अंक

पत्रिका परिवार

- संरक्षक : श्री केल्विन हैरिस खारशींग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग
- प्रधान संपादक : श्री रूपक साहा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
- परामर्शदाता : श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
- संपादक मंडल : श्रीमती स्निग्धा फुकन, सहायक निदेशक (राजभाषा)
श्री अजित सिंह, वरिष्ठ अनुवादक
श्रीमती विजय लक्ष्मी एस., कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ : मेघालय के पश्चिम जयंतीया पहाड़ी में स्थित क्रांगशूरी जलप्रपात

नोट: पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संरक्षक अथवा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा



“अनमोल विचार”

“राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।” - बालकृष्ण शर्मा नवीन।

“समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।” - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।

“हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है।” - बाबूराम सक्सेना।

“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है” - सुमित्रानंदन पंत।

“भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।” - टी. माधवराव।

“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।” - डॉ. राजेंद्र प्रसाद।

“हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।” - राहुल सांकृत्यायन।

“हिंदी में हम लिखें पढ़ें, हिंदी ही बोलें।” - पं. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी।

“देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है।” - सेठ गोविंददास।

नवीन पूर्वांचल संदेश

प्रथम अर्ध वार्षिक पत्रिका - वर्ष 2025 - 26

20वां अंक

अनुक्रमणिका

क्र.सं. लेख/रचना	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ
1. फिल्म सिटी का भ्रमण	श्री राज्यपाल देवकोटा	17-18
2. मेघालय की यादगार यात्रा	श्री घनश्याम कुमार	19
3. संतुलन	श्री राज्यपाल देवकोटा	20
4. राहें जिंदगी	श्री राजु नागल	20
5. शहरी जंगल के बाहर	सुशांत बी. रसाईली	21
6. जीवन	सुश्री सबिता चक्रवर्ती	22
7. वक्त	सुश्री दिव्या कुमारी राय	22
8. मातृ — भक्त	सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम	23
9. प्रकृति बचाओ	श्रीमती मेघा रानी	24
10. महक	श्री पार्थ ज्योति दे	25
11. तो सही...	श्री सुरेंद्र कुमार	26
12. दस्तूर	श्री राज्यपाल देवकोटा	26
13. शादी का सच	श्री भगीरथ प्रसाद	27
14. दिवाली का उपहार	श्री स्वास्तिक बी. रसाईली	28
15. पढ़ाई	सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम	29
16. दोस्त	श्री अनीश कुमार	29
17. मुक्तक	श्री सुरेंद्र कुमार	35
18. कोई नहीं भाता	श्री प्रेम कुमार	35
19. माँ	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	36-37
20. खुद के लिए खड़ी स्त्री	श्रीमती मेघा रानी	38
21. बारिश	श्रीमती आकांक्षा पटेल	39

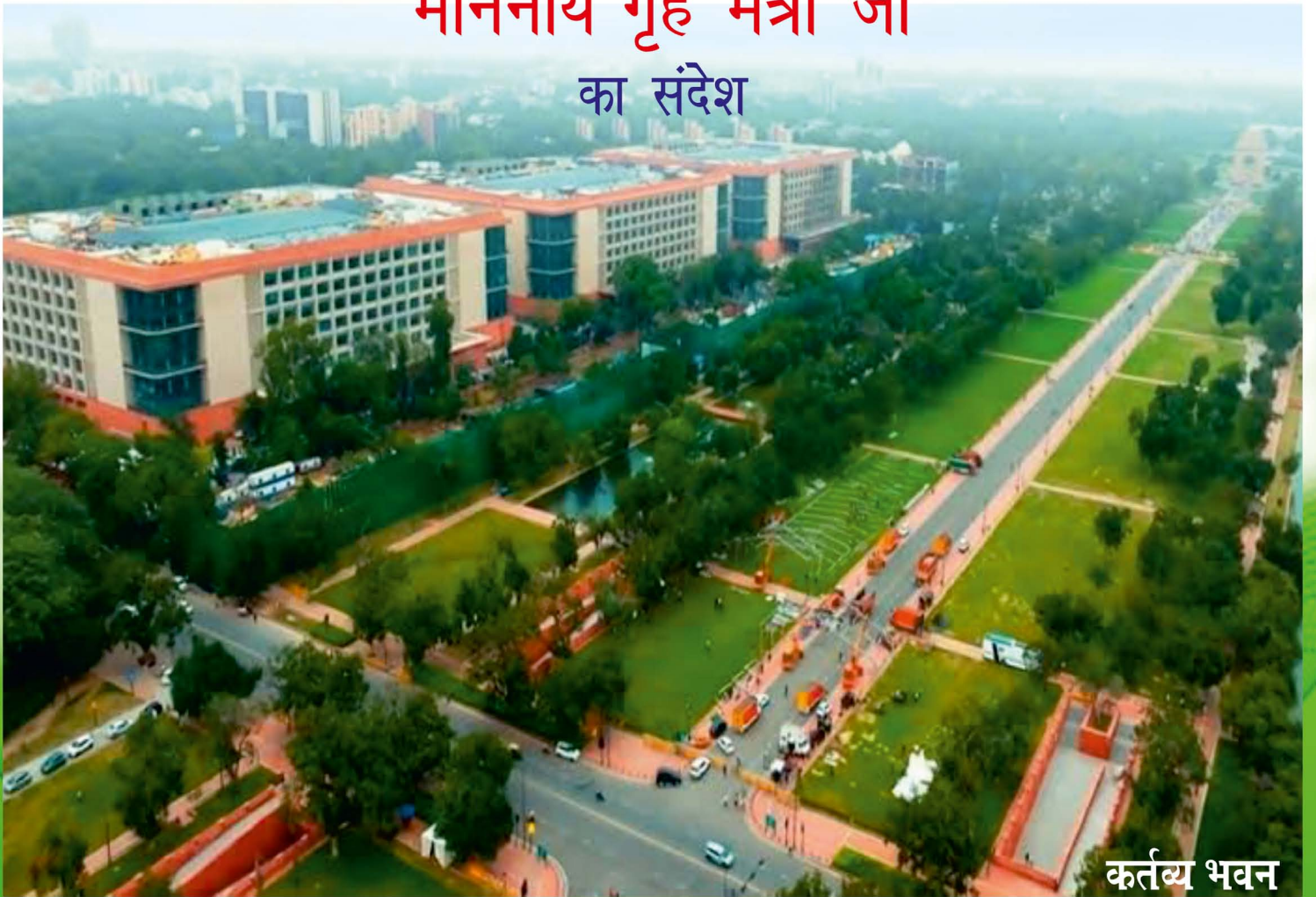
22. कर्म ही धर्म	श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम	39
23. मेघालय	श्री प्रेम कुमार	40
24. रिश्ते की उलझन	श्री गौतम वर्मा	40
25. G20 शिखर सम्मेलन: वैश्विक आर्थिक सहयोग का एक मंच	रुफस एच. ग्राहाम डियेंगदोह	41
26. खूबसूरती	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	42
27. हिंदी का दीप जलाएँ	श्रीमती बादाहुन एस. नोंग्रुम	43
28. मानवता की मिसाल	श्री घनश्याम कुमार	44
29. हिंदी	सुश्री दिव्या कुमारी राय	45
30. तारें	श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम	45
31. माँ का स्नेह	श्री भगीरथ प्रसाद	46
32. मेघालय के खासी जनजाति के खान-पान	श्रीमती स्निग्धा फुकन	47-50





हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदयों को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

“देसिल बयना सब जन मिट्ठा।”

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

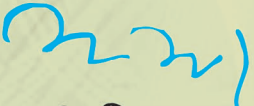
आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025


(अमित शाह)





संदेश



इस कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 20वां अंक आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की भावनाओं, संस्कृति और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह हमारी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विविधता को जोड़ने वाली सेतु है। आज यह न केवल शासन और प्रशासन की भाषा है, बल्कि शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, पत्रकारिता और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपनी हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्ध परंपरा को संजोते हैं, बल्कि संगठन में रचनात्मक वातावरण को भी प्रोत्साहित करते हैं। यह केवल लेखन-संग्रह नहीं, बल्कि हमारी सृजनात्मकता, विचारशीलता और अभिव्यक्ति की क्षमता का सुंदर प्रतिबिंब है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका की सामग्री पाठकों को ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक लगेगी तथा इस कार्यालय के रचनाकार आगे भी अपनी प्रतिभा और विचार साझा करने के लिए इस पथ पर अग्रसर रहेंगे।

पत्रिका को सफल बनाने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

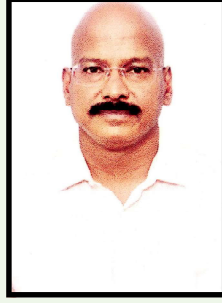
रवीन्द्र कर्

(केल्विन हैरिस खारशींग)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय,
शिलांग



संदेश



अपने कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 20वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

हिंदी भाषा का साहित्यिक इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली है। वर्तमान समय में हिंदी विश्व पटल पर भी अपनी पहचान बना रही है। हिंदी का महत्त्व केवल राजभाषा होने तक सीमित नहीं है। यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम ऐसी भाषा के संवाहक हैं, जो सरलता में महान और अभिव्यक्ति में सशक्त है। हमारा दायित्व है कि हम हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाएँ और इसे व्यवहारिक जीवन में अधिक से अधिक प्रयोग करें। हिंदी जितनी अधिक जीवंत और प्रचलित होगी, उतना ही हमारा राष्ट्रीय गौरव भी बढ़ेगा।

मैं, समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया है।

पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन के पश्चात अपनी मूल्यवान् प्रतिक्रिया हमें अवश्य प्रदान करें, ताकि आगामी अंकों को और अधिक आकर्षक एवं उत्कृष्ट बनाया जा सके।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत उन्नति की मंगलकामनाओं सहित।

(रूपक साहा)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

एवं प्रधान संपादक 'नवीन पूर्वांचल संदेश'



सत्यमेव जयते

संदेश



मुझे अत्यंत हर्ष है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वाचल संदेश' का 20वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

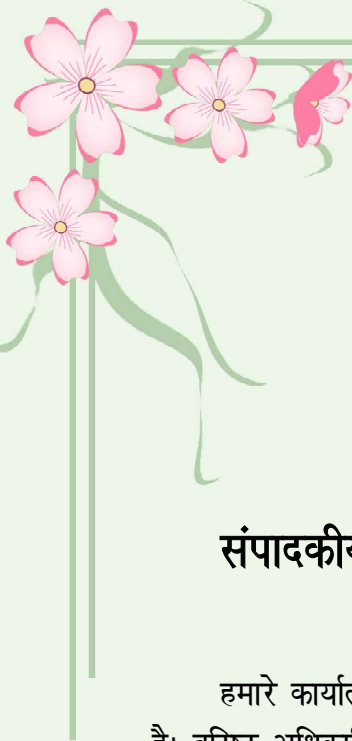
हिंदी का महत्व केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की एकता, सांस्कृतिक गौरव और बौद्धिक विकास का भी आधार है। आज जब हिंदी विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रही है, तब साहित्यिक हिंदी का महत्व और बढ़ जाता है। यह भाषा हमें हमारे इतिहास, परंपरा और मूल्यबोध से जोड़ती है। यदि हम हिंदी को जीवन का अंग बनाएँगे, तो न केवल भाषा का उत्थान होगा, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति भी सुनिश्चित होगी।

मैं सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल और सहयोगियों को हृदय से बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को संभव बनाया। आशा है कि यह अंक पाठकों को विचारों की नवीनता, सकारात्मकता और प्रेरणा प्रदान करेगा।

पत्रिका की सफलता और समृद्ध भविष्य हेतु हार्दिक शुभेच्छाएँ।

(रातुल चंद्र बरा)

उप महालेखाकार (ले.ह. एवं वी.एल.सी.)



संपादकीय



हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 20वां अंक आपके समक्ष सहर्ष प्रस्तुत है। वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन एवं सहकर्मियों के सृजनात्मक योगदान से यह पत्रिका वर्तमान स्तर तक पहुँची है।

भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और हिंदी इन सभी भाषाओं को एक माला में पिरोकर रखती है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा प्रयास है कि हिंदी को न केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित रखा जाए, बल्कि इसे विचार, ज्ञान और साहित्य के मंच के रूप में भी स्थापित किया जाए।

इस अंक में विविध विषयों पर लेख, कविताएँ, आलेख और अनुभव साझा किए गए हैं। यह आशा है कि यह अंक सुधि पाठकों की जिज्ञासा को संतुष्टि एवं प्रेरणा प्रदान करेंगे। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल पढ़ने में रुचिकर सिद्ध होगी, बल्कि यह सभी को हिंदी भाषा के प्रयोग तथा अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित भी करेगी।

संपादकीय मंडल की ओर से उन सभी लेखकों और सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने अपनी अमूल्य रचनाओं और सहयोग से इस पत्रिका को सफल बनाने में योगदान दिया है।

अंत में, सुधि पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन उपरांत अपने सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ हमें अवश्य प्रदान करें, ताकि आगामी अंकों को और अधिक उत्कृष्ट एवं उपयोगी बनाया जा सके।

मंगलकामनाओं सहित।

हिंदी प्रकोष्ठ,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग



अपने अनमोल वचनों से श्रोताओं को अभिभूत करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय

सभा का उद्बोधन करती हुई मुख्य अतिथि महोदया



समारोह की शोभा बढ़ाती हुई बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति



वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले अनुभाग के शाखा अधिकारी को मुख्य अतिथि महोदया शील्ड से सम्मानित करती हुई



समारोह के अंतिम चरण में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय

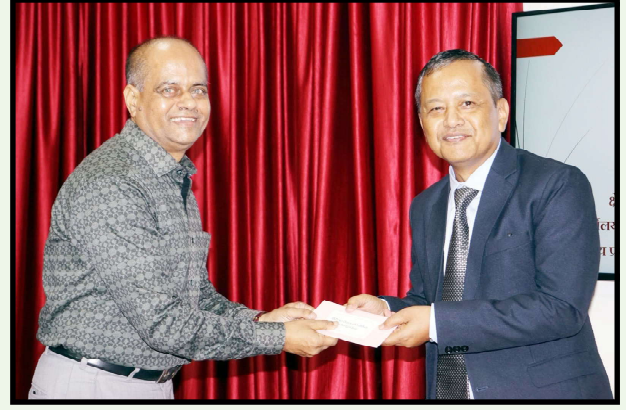


समारोह के शुभ अवसर पर मंच संचालन करते हुए श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक



समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि सहित कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली बालिकाओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए क्रमशः प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय, उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय एवं उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय





हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की निर्णायक समिति एवं
उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय



मुख्य अतिथि महोदया, तीनों कार्यालयों के विभागाध्यक्ष, समूह अधिकारी एवं हिंदी पखवाड़ा 2024 से जुड़े
अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीवृंद

फिल्म सिटी का भ्रमण

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



हाल ही में मुझे कार्यालय संबंधित प्रशिक्षण हेतु 'भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज (ए.एस.सी.आई.), हैदराबाद' जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जिस संस्थान में हमें प्रशिक्षण दिया जाना था, वह कुछ एकड़ में फैली एक विरासत इमारत थी। शहर के बीचों-बीच स्थित इस इमारत का रख-रखाव और देखभाल अच्छी तरह से किया जाता था।

हालांकि ट्रेनिंग सेशन 6 दिनों का था लेकिन ट्रेनिंग के बाद और एक दिन भोजन के पश्चात हम सभी प्रशिक्षुओं को नजदीकी प्रसिद्ध स्थानीय पर्यटन स्थल जैसे गोलकोंडा किला, चारमिनार आदि भ्रमण कराया गया जो हमारे लिए इतिहास के पन्नों को नज़दीक से देखने का मौका था।

इन सब के बीच हमें एक दिन 'रामोजी फिल्म सिटी' जाने का मौका मिला जिसकी कुछ यादें मैं सबके साथ साझा करना चाहता हूँ।

हैदराबाद में रामोजी फिल्म सिटी में घूमने से सिनेमाई जादू, सांस्कृतिक अनुभव और परिवार के अनुकूल मनोरंजन का मिश्रण मिलता है।

रामोजी समूह द्वारा 1996 में स्थापित, 1666 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैली रामोजी फिल्म सिटी, एक स्वप्निल सेल्युलाइड यात्रा है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा दुनिया के सबसे बड़े फिल्म स्टूडियो परिसर के रूप में प्रमाणित, रामोजी फिल्म सिटी में, एक फिल्म निर्माता अपनी पटकथा लेकर चल सकता है और फिल्म लेकर वापस जा सकता है। रामोजी फिल्म सिटी में फिल्म निर्माण के लिए 47 साउंडस्टेज, 50 स्टूडियो फ्लोर और विभिन्न आउटडोर सेट हैं।

इस फिल्म सिटी में 100 एकड़ में फैला “बाहुबली” सेट एक असाधारण आकर्षण है, जो आगंतुकों को महिष्मती साम्राज्य की भव्यता से रूबरू कराता है।

“मूवी मैजिक” नामक शो में फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को दिखाया जाता है, जिसमें लाइव स्टंट और डीजे प्रदर्शन शामिल हैं। हमें इस शो में वेस्टर्न और चाइनीज का मिश्रित ड्रामा दिखाया गया जो काफी मनोरंजक और हैरतअंगेज था।

“फिल्मी दुनिया” एक काल्पनिक दुनिया है, जहाँ पौराणिक लोक, दुनिया के अजूबे, रियो कार्निवल और एफिल टॉवर सब एक ही जगह पर आपका इंतजार कर रहे थे।

अन्य उल्लेखनीय क्षेत्रों में तितली पार्क और बोनसाई उद्यान के साथ इको जोन और बच्चों के बीच लोकप्रिय प्रेतवाधित घर शामिल हैं।

लाइव शो और सांस्कृतिक अनुभव

- आगंतुक लाइव प्रदर्शनों की सराहना करते हैं, जैसे कि “लाइट्स कैमरा एक्शन” शो, जो फिल्म निर्माण के पीछे के दृश्यों को दिखाता है।

- “स्पिरिट ऑफ रामोजी” शो को भारतीय संस्कृति और परंपराओं के चित्रण के लिए विशेष रूप से सराहा जाता है।

पार्क का रखरखाव अच्छी तरह से किया जाता है, यहाँ साफ—सुथरे शौचालय, आर.ओ. वाटर स्टेशन और बैठने के लिए पर्याप्त जगह है।

हालांकि, कुछ आगंतुकों को छायादार क्षेत्रों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे कड़ी धूप के दौरान असुविधा हो सकती है।

हम सभी प्रशिक्षुओं ने रु. 3000/- प्रति व्यक्ति की दर से योगदान देकर फिल्म सिटी का दौरा किया था जिसमें सभी का यात्रा, भोजन, टिकट आदि का खर्चा सम्मिलित था।

हालांकि कुछ लोगों को भोजन की कीमतें ज्यादा लग सकती हैं, भोजन की कीमत प्रति व्यक्ति रु. 300 से रु. 350 तक होती है।

भोजन की गुणवत्ता ठीक है, हालांकि, अगर पैक किया हुआ खाना उपलब्ध होता तो बेहतर होता।

इस फिल्म सिटी में स्थानीय वस्तुएँ की खरीदारी के लिए पर्याप्त दुकानें हैं जो मोतियों की माला, चूड़ियाँ, स्थानीय परिधान आदि उचित मूल्यों पर उपलब्ध कराते हैं।

सार्वजनिक परिवहन के सीमित विकल्प होने के कारण उबेर या निजी कैब का उपयोग करना उचित है।

पार्क केंद्रीय हैदराबाद से लगभग 45 मिनट की दूरी पर है।

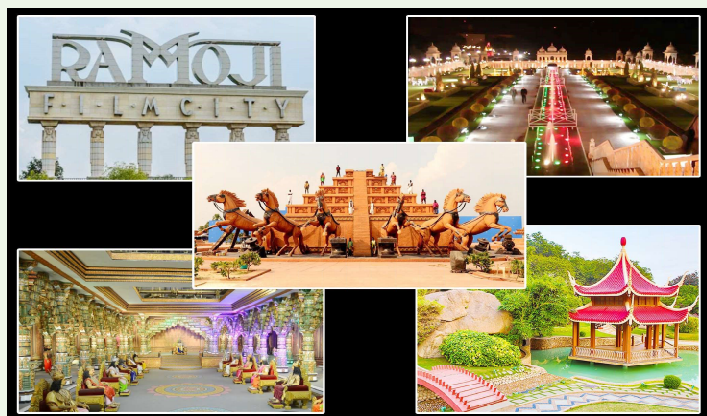
दिन का अधिकतम लाभ उठाने के लिए सुबह 9 बजे तक पहुँचना उचित है, क्योंकि पार्क बहुत बड़ा है और वहाँ पहुँचने के लिए काफी पैदल चलना पड़ता है।

कुल मिलाकर हमें रामोजी फिल्म सिटी परिवारों, फिल्म प्रेमियों और मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभवों का अनूठा मिश्रण चाहने वालों के लिए एक सार्थक यात्रा लगी। जबकि भोजन की कीमत और छायादार क्षेत्रों जैसे कुछ पहलुओं में सुधार किया जा सकता है। आकर्षण और समग्र माहौल इसे एक यादगार गंतव्य स्थल बनाता है।

अगर आप घूमने की योजना बना रहे हैं, तो इन सुझावों पर विचार करें:

- पहले से योजना बनाएँ: लंबी कतारों से बचने के लिए ऑनलाइन टिकट बुक करें।
- हाइड्रेटेड रहें: पानी की बोतल साथ रखें, क्योंकि पार्क में बहुत पैदल चलना पड़ता है।
- आरामदायक कपड़े पहनें: आरामदायक जूते पहनें और धूप से बचने के लिए टोपी या सनस्क्रीन का इस्तेमाल करें।

रामोजी फिल्म सिटी में अपने सिनेमाई रोमांच का आनंद लें!



मेघालय की यादगार यात्रा

श्री घनश्याम कुमार
भाई - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

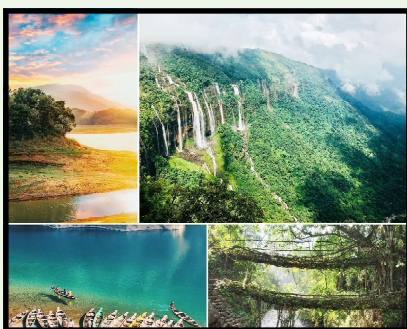


मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेघालय की हरियाली और बारिश की बूँदें मेरे दिल पर इतनी गहरी छाप छोड़ जाएँगी। जब मैंने पहली बार चेरापूँजी के रास्ते में उन घने जंगलों और ऊँचे-ऊँचे पेड़ों को देखा, तो लगा जैसे प्रकृति ने यहाँ अपने सभी रंग बिखेर दिए हों। सड़क के किनारे बहती नदियाँ, झरने और कोहरे से ढके पहाड़, हर चीज़ मानो किसी सपने जैसी थी।

हमारी पहली मंज़िल थी लिविंग रूट ब्रिज। यह पुल जिंदा पेड़ों की जड़ों से बना था और सदियों से स्थानीय लोगों द्वारा संरक्षित किया गया था। जब मैंने उस पुल पर कदम रखा, तो लगा जैसे मैं किसी जादुई दुनिया में आ गया हूँ। नीचे से बहती तेज़ धारा वाली नदी का शोर और चारों तरफ हरियाली - यह अनुभव अविस्मरणीय था। वहाँ के स्थानीय लोगों ने बताया कि यह पुल प्रकृति और मानव सहयोग का बेहतरीन उदाहरण है।

अगले दिन हम मावल्यान्गांग गाँव पहुँचे, जिसे एशिया का सबसे साफ गाँव कहा जाता है। वहाँ की सफाई और व्यवस्था देखकर हैरानी हुई। हर घर के बाहर फूलों के गमले, साफ-सुथरी गलियाँ और बच्चों की मुस्कान - सब कुछ इतना मनमोहक था कि मन करता था, यहीं बस जाऊँ। लेकिन मेघालय की असली खूबसूरती तब देखने को मिली जब हम नोहकलिकाई झरना पर पहुँचे। 340 मीटर ऊँचा यह झरना इतना शक्तिशाली था कि इसकी गर्जना दूर से ही सुनाई दे रही थी। नीचे पानी का नीला-हरा रंग और चारों तरफ बादलों का छूना - ऐसा लग रहा था जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। वहाँ बैठकर मैंने महसूस किया कि प्रकृति की यह शक्ति हमें विनम्र बनना सिखाती है।

यात्रा के चौथे दिन, हम डॉकी की ओर निकले - भारत-बांग्लादेश सीमा पर बसा वह गाँव जहाँ उमगोट नदी का पानी इतना स्वच्छ है कि नावें हवा में तैरती हुई प्रतीत होती हैं। रास्ते भर घुमावदार पहाड़ी मार्ग और जंगलों के बीच से गुजरते हुए, हमारी गाड़ी एक ऐसे स्थान पर रुकी जहाँ नदी का रंग नीलमणि जैसा चमकदार था। स्थानीय बोटमैन ने हमें नाव की सवारी कराई, और जैसे ही हमने नीचे देखा, तो पानी इतना साफ था कि नदी की तलहटी में पड़े पत्थर और मछलियाँ स्पष्ट दिख रही थीं।



रात को शिलांग में बिताया गया समय भी कम यादगार नहीं था, वो ठंडी हवाएं और क्षण-क्षण में बदलता हुआ मौसम, दूर पहाड़ों पर बसे घरों में चमचमाती रात की लाइट्स...

जब वापस लौटने का समय आया, तो मन भारी हो गया। मेघालय ने मुझे न सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता से अभिभूत किया, बल्कि यहाँ के लोगों की सादगी और मेहमाननवाजी ने दिल छू लिया। यह यात्रा सिर्फ एक ट्रिप नहीं, बल्कि एक अनमोल अनुभव थी जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूँगा।

राहें जिंदगी

संतुलन

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



श्री राजु नागल
लेखाकार



गरीब सोये शांत चित्त,
अमीर करवट बदलता रहे
सुने बचपन से ये कहावत,
अब जमे न बात मुझे
भूखा पेट, समस्या अनेक,
फिर कैसे तू सोये मस्त नींद,
पूछे धनवान एक गरीब से
यहाँ सबकुछ है पास मेरे,
फिर भी रातभर करवट बदलता रहूँ
सिर खुजलाये, पेट सहलाये,
सूखे होंठ से गरीब की आवाज आये,
मालिक, किताब कहानी की बात है अजब,
जहाँ जीते हमेशा दुखी मजबूर,
शायद नियम ही ऐसा कुछ है जीवन का,
गरीब को वास्तव में न सही,
कही तो सुखी दिखावो,
संतुलन भी तो चाहिए जीवन में।



राह जिंदगी की कुछ इस तरह गुजरती जा रही है,
अनचाही ख्वाहिशों की सौगात ला रही है।
मंजिल मिलेगी या नहीं, ये अभी मालूम नहीं,
मजा वो नहीं है, ये हर साँस बता रही है।
तजुर्बा नहीं है खास जिंदगी का,
बस चलते जा रहे हैं, जैसे ये (जिंदगी) चला रही है।
सबक बहुत मिलेंगे, ये एहसास भी होता है,
चुनौती भरी जिंदगी के आलम कुछ खास ही होते हैं।
मोम ने खुद पिघल कर दी है रौशनी,
तो क्या उसका वजूद नहीं है?
पर याद रहे - मजबूत चट्टान में भी सुराख होता है।
ना मोम बनने की ख्वाहिश है,
और ना ही चट्टान होने का गुरुर है।
जिंदगी में बहुत से मुकाम हैं,
जो अभी कोसों दूर हैं।
धीरे-धीरे ही सही, चले तो
मंजिल तक पहुँच ही जाएँगे।
रफ्तार जरूरी नहीं है...
ये जमाने की रीत सिखा रही है।
राह जिंदगी की कुछ इस तरह गुजरती जा रही है...



शहरी जंगल के बाहर

सुशांत बी. रसाईली

सुपुत्र - श्री राजेश कुमार रसाईली
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



सुबह के ग्यारह बज रहे थे जब देवेश और सुचित्रा नूरानी पहुँचे। उनके दादाजी ने बस स्टॉप पर उनका इंतजार करने की जहमत उठाई थी, ताकि वे रास्ता भटक न जाएँ। देवेश और सुचित्रा चेन्नई में रहने वाले भाई-बहन थे। उनके माता-पिता का विचार था कि उन्हें नूरानी में एक दिन बिताना चाहिए। वे चाहते थे कि शहर के बच्चे यह महसूस करें कि चेन्नई के शहरी जंगल के बाहर भी एक दुनिया है।

उनके दादाजी ने मजाक में कहा कि इस इलाके में उनका मोबाइल नेटवर्क काम नहीं करेगा। देवेश और सुचित्रा अपने दादाजी के साथ घर की ओर चल पड़े, जिन्हें वे 'दादू' कहते थे। कच्ची सड़क का स्पर्श थोड़ा देहाती लगा। कुछ मिनटों के बाद, वे दादू के घर पहुँच गए, जो गुलाब की लकड़ी और सागौन की लकड़ी से बना था। लैवेंडर की खुशबू हवा में फैल रही थी, और पक्षियों की चहचहाहट एक शांत वातावरण प्रदान कर रही थी। हवा आश्चर्यजनक रूप से शुद्ध लग रही थी, जो चेन्नई में कभी नहीं थी।

उनकी दादी पास के गाँव में एक रिश्तेदार की शादी में गई थी, इसलिए दादू ने उनके स्थानीय मसालों और स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्री का इस्तेमाल किया, जिससे प्रामाणिक नूरानी व्यंजन और भी स्वादिष्ट बन गए। देवेश और सुचित्रा दादू की बेहतरीन पाक कला देखकर हैरान रह गए।

दोपहर का समय झपकी लेने में बीत गया। वे अपने दादाजी के कुँ से पानी खींचने की आवाज़ सुनकर जागे। भाई-बहन बाल्टी से बंधी रस्सी खींचने के लिए उत्साहित होकर दादू की मदद करने के लिए दौड़े। देवेश और सुचित्रा ने गाँव के जीवन की सादगी का आनंद लेने का फैसला किया। इसलिए उन्होंने नदी में तैरने का विकल्प चुना। उन्होंने पानी का स्पर्श का आनंद लेते हुए बहुत मस्ती की।

जैसे-जैसे सूरज ढलता गया, गाँव का चौराहा पारंपरिक लोक संगीत की मधुर ध्वनियों और मनमोहक कहानियों से गूँजने लगा। देवेश और सुचित्रा को आश्चर्य हुआ कि नूरानी में लोग टेलिविजन या मोबाइल फोन के बारे में चिंतित नहीं थे। दादू ने उन्हें बताया, 'इस दुनिया में लोग सच्चे रिश्तों को महत्व देते हैं'।



अगले दिन, अपनी जिंदगी की सबसे शांतिपूर्ण नींद के बाद, देवेश और सुचित्रा के जाने का समय आ गया। उन्होंने दादू से फिर से मिलने का वादा किया और अपने साथ जीवन भर की यादें लेकर चेन्नई वापिस चले गए।

वक्त

जीवन

सुश्री सबिता चक्रवर्ती
डी.ई.ओ. (बहिःस्रोत)



सुश्री दिव्या कुमारी राय
सुपुत्री - श्री नवल किशोर राय
एम.टी.एस.



चाहे कितनी भी मुश्किलें आए,
अडिग रहना तू अपने पथ पर।
चाहे सारी दुनिया दुत्कारे,
तू अपना विश्वास न छोड़।
जमाना हर मोड़ पर लेगा तेरी अग्नि परीक्षा,
तू अपनी काबिलियत पर कभी शक न कर।
जो मुश्किलों से न गुजरे,
उसे दुनिया की क्या ही है खबर।
तू अपनी जिंदगी का मालिक बन,
किसी और के हाथों की कठपुतली न बन।
बोलने वाले बोलेंगे तेरे पीछे,
तू अपना दृढ़ संकल्प न बदल।
चाहे कितनी भी मुश्किलें आए,
अडिग रहना तू अपने पथ पर।



तू भाग रहा है जिस धन के पीछे, वो न कभी होगा तेरा
कुछ साथ न तेरे जाएगा, जब आएगी अंतिम बेरा
इसलिए आग्रह करता हूँ, तू दिल से मुझे स्वीकार कर
मैं वक्त हूँ साथी तेरा, मुझे न यूँ बर्बाद कर
मैं अनंत हूँ अनादि हूँ, मुझमें न कोई ठहराव है
कल वो शहर बन जाएगा, जो आज छोटा गाँव है
सब भ्रमित यही हो जाते हैं, यह उम्र का वह पड़ाव है
जो करना है वो शुरू कर, अब और न इंतज़ार कर
सब कुछ तुझे मिल जाएगा, बस तू जरा आगाज़ कर
मैं वक्त हूँ साथी तेरा, मुझे न यूँ बर्बाद कर
तू लक्ष्य अपना साध कर, एक घड़ी कलाई पे बाँध
तू फकत तिनका सा हो मेरा, और मुझसे कुछ भी माँग ले
मैं रुक कभी सकता नहीं, इस सच्चाई को भी जानकर
थोड़ा मुझपे थोड़ा खुदपे, आँख मूंदे तू ऐतबार कर
मैं वक्त हूँ साथी तेरा, मुझे न यूँ बर्बाद कर
न मेरा कोई रूप है, न मेरी कोई शक्त है
बस इंतज़ार के नाम पे, क्यूँ करता मेरा कल्ल है
ये जंग है जीवन की मनु, जीतना है इसको हारकर
या मैं तुझे यूँ मार दूँ, या तू मुझपे पहला वार कर
मैं वक्त हूँ साथी तेरा, मुझे न यूँ बर्बाद कर



मातृ – भक्त

सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम
सुपुत्री - श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार



किसी गाँव में एक छोटा - सा गरीब परिवार था। उसमें माँ के अलावा उसका एक बेटा था। उसका नाम अमर था। वह सदा अपनी माता की आज्ञा का पालन किया करता था। माँ की सेवा करना और उन्हें आनंद पहुँचाना उसे बहुत अच्छा लगता था। माँ की सेवा करने में यदि उस बालक को कभी कुछ दुःख भी होता तो वह उसे सहन कर लेता था। माँ भी अपने पुत्र को बहुत प्यार करती थी। एक बार अमर की माँ बीमार पड़ी। रात को माँ ने उसे पुकारा - 'बेटा, मुझे बहुत प्यास लगी है, पानी ले आओ'। माता की बात सुनकर लड़का झटपट अंदर गया और पानी का गिलास लेकर माता के पास पहुँचा लेकिन तब तक उसकी माँ को नींद आ चुकी थी।

बालक अमर ने माँ को जगाना ठीक नहीं समझा। वह माँ के जगने की राह देखने लगा कि माँ जाग जाए तो मैं उसे पानी पिला दूँ। बीमार माँ को अच्छी नींद आई और वह रात में नहीं जागी। इस प्रकार बालक अमर चुपचाप पानी लिए हुए सारी रात खड़ा रहा। सुबह जब लड़के की माँ जागी तो उसने देखा कि उसका बेटा अमर पानी लिए चुपचाप खड़ा है। माँ की आँखों में प्रेम के आँसू भर आए। माँ ने कहा - 'बेटा तू रात भर पानी लिए क्यों खड़ा रहा'? अमर ने कहा - 'माँ तुम मेरे लिए हजारों बार रात-रात भर जागी हो फिर मैं यदि तुम्हारे लिए एक रात जग गया तो क्या हुआ'?

ऐसा मातृ - भक्त था बालक अमर। यही बालक आगे जाकर एक बड़ा प्रोफेसर बना और उसे समाज में भारी सम्मान मिला।



प्रकृति बचाओ



श्रीमती मेघा रानी
पत्नी - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

हरे-भरे वनों की शान न जाने दो मिटने,
नदियों का मधुर गीत न होने दो सूना।
फूलों की खुशबू से भरा रहे संसार,
प्रकृति का ये उपहार न होने दो सूना।

धरती की हरियाली को बचाना है हमें,
पेड़-पौधों का सम्मान करना है हमें।
हवा को शुद्ध, पानी को निर्मल रखो,
जीवन का आधार है ये, इसे अकलंकित रखो।

पशु-पक्षियों का घर न उजाड़ो कभी,
उनकी मुक्त गगन में उड़ान बनाए रखो।
जंगलों की रक्षा करो, उन्हें न काटो,
ये धरती का गहना, इसे सँभाल कर रखो।

प्लास्टिक के विष से मत दूषित करो धरती,
नदी, सागर, किनारे साफ रहें हमेशा।
छोटे-छोटे कदमों से बदलाव लाओ,
प्रकृति के साथ प्रेम का नाता बनाओ।

आओ मिलकर संकल्प लें हम सभी,
प्रकृति को बचाने का व्रत धरें मन में अभी।
भविष्य की पीढ़ी को हरियाली देंगे,
इस धरती को हम सब मिलकर स्वर्ग बनाएँगे।

जागो, संभालो, बचाओ ये धरती माँ,
इसकी रक्षा में ही छुपा है राज जीवन का।
प्रकृति के बिना अधूरा है ये संसार,
इसे सहेजकर रखो, यही है प्यार।

धरती बचाओ, जीवन बचाओ ...!!!



महक

श्री पार्थ ज्योति दे
सहायक लेखा अधिकारी

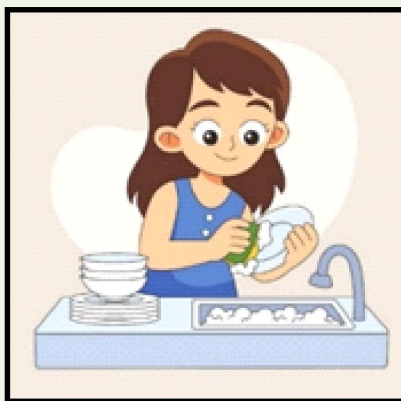


गाँव की गली में घर था प्यारा,
उसमें रहती थी गौरी हमारी।
बर्तन पड़े थे ढेर बहुत,
गौरी को खेतों की थी कुछ फिकर।

बोली गौरी, “सावित्री बहना,
बर्तन धो दो, हो जाऊँ धन्यना।”
सावित्री हँसी, बोली, “ठीक है,
काम में मैं पीछे नहीं हूँ बहना।”

बर्तन लेकर पहुँची बाथरूम,
देखा दो बोतलें रखीं थीं घूमा।
एक में किरासन तेल भरा,
दूजे में था साबुन प्यारा।

बिना देखे उठा ली बोतल,
किरासन से धोए बर्तन झटपट।
रगड़े ऐसे, चमके जैसे,
चाँद-सितारे धरती पर जैसे।



गुनगुनाती वह काम में खोई,
किरासन की महक नहीं वो बोली।
गौरी लौटी, देखा नजारा,
बर्तन चमकें, महक निराला।

“अरे बहना, ये क्या कर डाला?
किरासन से धोए बर्तन सारा!”
सावित्री ने आँखें फैलाई,
फिर दोनों ने मिलकर हँसी उड़ाई।

गाँव में सब हँसने लगे,
दोनों की दोस्ती गहरी हुई।
सीख मिली सब बच्चों को प्यारी —
सावधानी हर काम में जरूरी भारी।

❖ सीख :-

बिना देखे काम न करना,
साधन को पहले पहचानना।
मेहनत सच्ची हो तो ठीक,
पर सावधानी सबसे बड़ी सीख!

तो सही...

श्री सुरेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी



हम चाहें, या तुम चाहो,
पर चाहो तो सही,
ये आँखें क्यूँ चुराती हो,
कभी मिलाओ तो सही,
हम भी तो देखे,
क्या है इस दिल में,
पर इस दिल को,
दिल से मिलाओ तो सही,
कुछ तुम गाओ, कुछ हम गाएं,
पहले गुनगुनाओ तो सही,
हमे दीदार करना है,
अपने चाँद का,
इस मुखड़े से जुल्फों के बादल,
हटाओ तो सही,
दो कदम तुम चलो, दो कदम हम चले,
पहले कदम बढ़ाओ तो सही,
क्या पता कल हम रहें ना रहें,
मगर इस सफर में,
साथ आओ तो सही।



दस्तूर

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

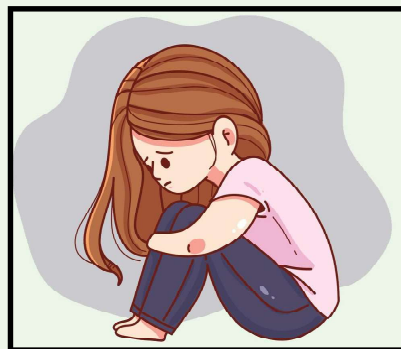


देख आया बाग माली का
फूल खिले थे अनेकोनेक
ध्यान खींचा एक ने मेरा
खिलने को जो न था तैयार

पूछा उससे नाराजगी क्या है
क्यों न मुस्काओ सबके जैसा
मनमें क्या कोई घाव छुपा है
पीड़ा से जिसके दबे हुये हो

सुनके मेरी बात करुणा से भरे
कोमल पंखुड़ी तनिक फड़फड़ाई
अस्फुट ध्वनि कुछ निकली
कोमल उस कली से

क्या ही फायदा खिलने का यौवन
जब अधखिले पंखुड़ी को नोचे जग सारे
अरे! शिखर पर तो चढ़ने दो यौवन मेरा
मंडराए भवरें फिर दस्तूर है युग का।



शादी का सच



श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

भाग 1: आरव की कहानी

आरव, एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर, अच्छे वेतन और सुसंस्कृत परिवार से था। माता-पिता ने शादी के लिए एक लड़की ढूंढी - सपना। देखने में सुशील, बोलने में मीठी, और प्रोफाइल में एम.बी.ए. की पढ़ाई और मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी।

शादी धूमधाम से हुई, लेकिन कुछ ही हफ्तों में आरव को शक होने लगा। सपना बार-बार मायके चली जाती, ऑफिस का बहाना बनाकर देर रात आती, और घर की जिम्मेदारियों से दूर रहती।

एक दिन आरव ने कुछ दस्तावेजों की जांच की - न तो सपना की डिग्री असली थी, न ही वह जिस कंपनी में काम करने का दावा करती थी, वहां उसका कोई नाम था।

सपना की असल मंशा सामने आई शादी करके दहेज और खर्च उठवाना, फिर तलाक की धमकी देकर पैसे ऐंठना। आरव का परिवार टूट चुका था।

भाग 2: सपना की सच्चाई

लेकिन कहानी का दूसरा पहलू भी था। सपना बचपन से ही सीमित अवसरों में पली-बढ़ी थी। समाज उसे केवल “अच्छी बहू” बनने की सीख देता रहा।

जब उसकी पहली शादी तय हुई, तो लड़केवालों ने दहेज की लालच में रिश्ता तोड़ दिया। दूसरी बार शादी हुई, तो ससुराल वालों ने उसे नौकरी छुड़वा दी, ताने दिए, और फिर घरेलू हिंसा शुरू हुई।

वह घर छोड़ आई और समाज की नजरों से छिपकर अपनी जिंदगी दुबारा शुरू की। अब वह जान चुकी थी कि रिश्ते में इज्जत माँगनी नहीं, कभी-कभी चालाकी से भी कमाना पड़ती है।

आरव उसका नया रिश्ता था, शायद सपना उसे धोखा नहीं देना चाहती थी, लेकिन वह डरती थी कि अगर उसने अपनी सच्चाई बताई, तो एक बार फिर उसे छोड़ दिया जाएगा। इसलिए उसने झूठ बोला।



अंत विचार:

शादी अब सिर्फ रिश्ता नहीं रही, कई बार यह एक सौदा बन गई है, जहाँ कभी पुरुष धोखा खाते हैं, तो कभी महिलाएं।

सवाल सिर्फ “किसने गलत किया?” का नहीं है, सवाल यह है कि हम ऐसे समाज की बुनियाद क्यों रख रहे हैं, जहाँ रिश्ते भरोसे से ज्यादा शक और स्वार्थ पर टिके हों?

दिवाली का उपहार

श्री स्वास्तिक बी. रसाईली

सुपुत्र - श्री राजेश कुमार रसाईली

वरिष्ठ लेखा अधिकारी



मुंबई में एक जगमगाती रात थी। दिवाली से पहले की रात थी। पूरा शहर रोशनी और सजावट से जगमगा रहा था। हर कोई जश्न मनाने के लिए खुश और उल्लासित था। मानस जगमगाती सड़कों पर टहल रहा था, तभी अचानक उसकी नजर एक ऐसी इमारत पर पड़ी जिस पर कोई सजावट नहीं थी। यह इमारत 'लीलावती मेमोरियल अनाथालय' थी।

मानस को आश्चर्य हुआ कि अनाथालय में उत्सव मनाने की कोई व्यवस्था क्यों नहीं की गई। उसने वहाँ के बच्चों के साथ अनाथालय में अपनी दिवाली मनाने को फैसला किया। उसने अपने विचार अपने दोस्तों को बताए। वे भी उसके साथ शामिल होकर अनाथालय में खुशियाँ लाना चाहते थे। मानस के माता-पिता को उसके प्रस्ताव पर गर्व हुआ। उन्होंने भोजन, सजावट और सरप्राइज की व्यवस्था करने में उसकी मदद की।

अगले दिन मानस और उसके दोस्त सभी बच्चों के लिए सजावट, नए कपड़े, खेल, मिठाइयाँ और भोजन लेकर लीलावती मेमोरियल अनाथालय पहुँचे। अनाथालय में सात से बाहर साल की उम्र के चालीस बच्चे रहते थे। उनके आते ही पूरा स्थान ऊर्जा और उत्साह से भर गया।

बच्चों ने अपने नए कपड़े पहने, उनके दिलों में गर्मजोशी भर गई। आधे घंटे के भीतर सजावट कर दी गई। मानस और रितुजा ने मजेदार खेलों का आयोजन किया, जबकि सुधीर और निशा ने खाने का प्रबंध किया। अनाथालय में खुशी का माहौल था। बच्चों को खेलते और मस्ती करते देख मानस का दिल खुशी से भर गया।

इसके बाद, सभी लोग भोजन के लिए बैठ गए। बच्चों ने नृत्य किया, गीत गाए और कहानियाँ सुनाई। हर बच्चे के पास एक सपना और एक मासूमियत थी जिसने शाम को महज जश्न से कहीं बढ़कर बना दिया। फिर, दोस्तों ने बच्चों को सरप्राइज गिफ्ट दिए। बच्चों की आँखों में चमक देखना अपने आप में एक खुशी थी।



जब दोस्तों ने विदा ली, तो उन्हें संतुष्टि का एहसास हुआ। मानस के दोस्तों ने कहा, 'ऐसे पल दिवाली को यादगार बनाते हैं'। उन्होंने मानस को उसके इस अद्भुत विचार के लिए धन्यवाद दिया। लीलावती मेमोरियल अनाथालय में उनकी शाम ने सहानुभूति और उदारता के महत्व को और पुख्ता किया। जहाँ तक बच्चों की बात थी, वे इससे बेहतर दिवाली उपहार नहीं मांग सकते थे।

पढ़ाई

सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम
सुपुत्री - श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार



नन्हा मुन्ना सा मैं था,
यहाँ से वहाँ खेलता था।

बोलते थे भाई जोर लगाकर,
पढ़ाई करलो मन लगाकर।

जो था आज, हो गया वो कल,
जो है आज, हो जाएगा वह कल।

पल-पल से ही बनता है दिन,
दिन-दिन से ही बनता है साल।

नहीं कर लोगे तो ठीक अभी पढ़ाई,
जीवन भर रोना होगा सुनलो हे भाई।



दोस्त

श्री अनीश कुमार
सुपुत्र - श्री नवल किशोर राय
(एम.टी.एस.)



दोस्त है तो ढ़ाई अक्षर का शब्द,
लेकिन है अनमोल।

दोस्त के कारण ही,

पता नहीं कितने करते हैं हम झोला।

एक अच्छा दोस्त उस पिता की तरह होता है,

जो गलती करने पर समर्थन नहीं विरोध करें।

उस माँ जैसा है,

जिसका प्रेम निस्वार्थ होता है।

हम उस देश से आते हैं,

जहाँ कर्ण, दुर्योधन के लिए अपने भाई के विरुद्ध

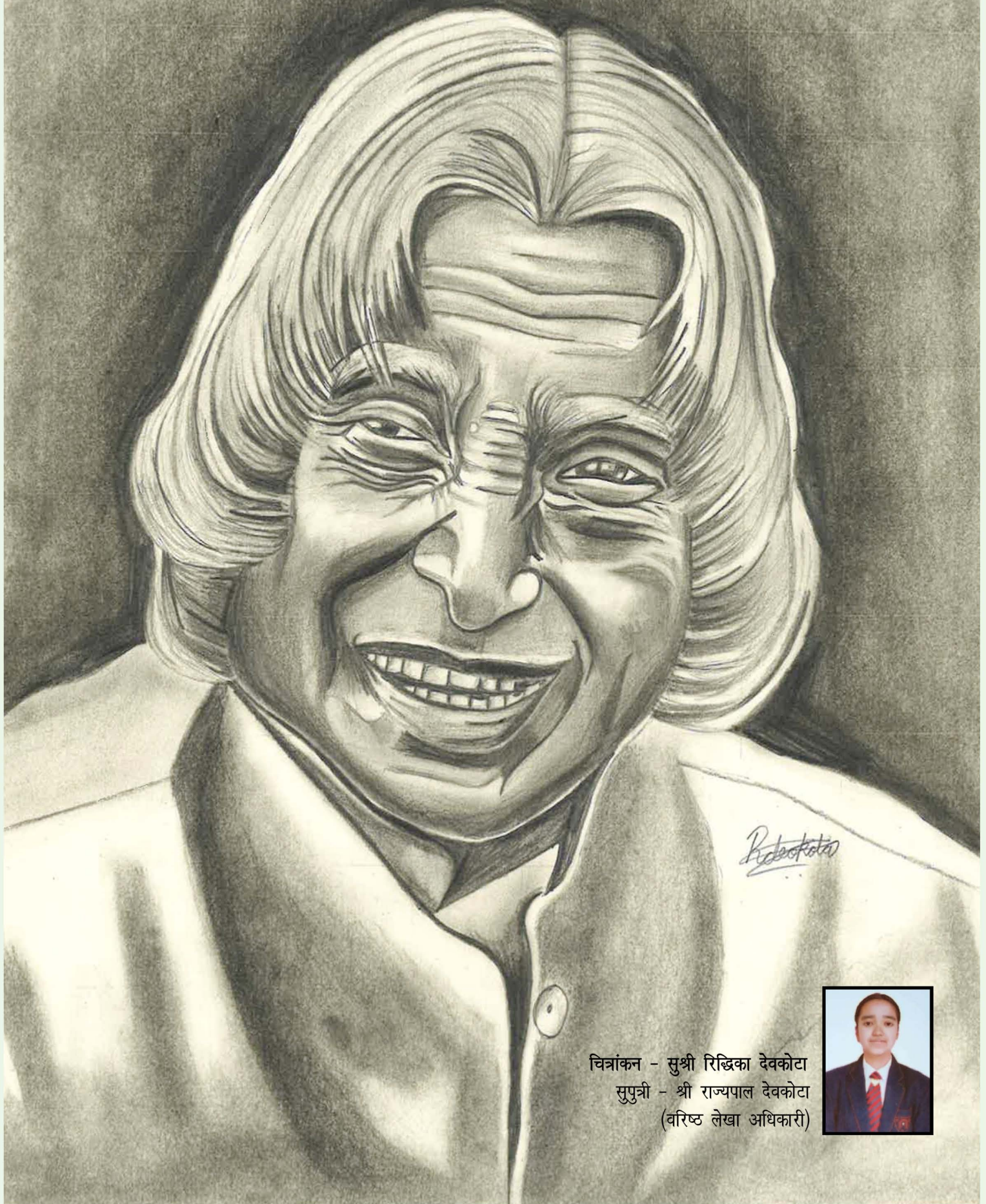
हथियार उठाएं।

दोस्त एक शब्द नहीं, पंचतंत्र की किताब है,

जो देता किस्से हज़ार है।



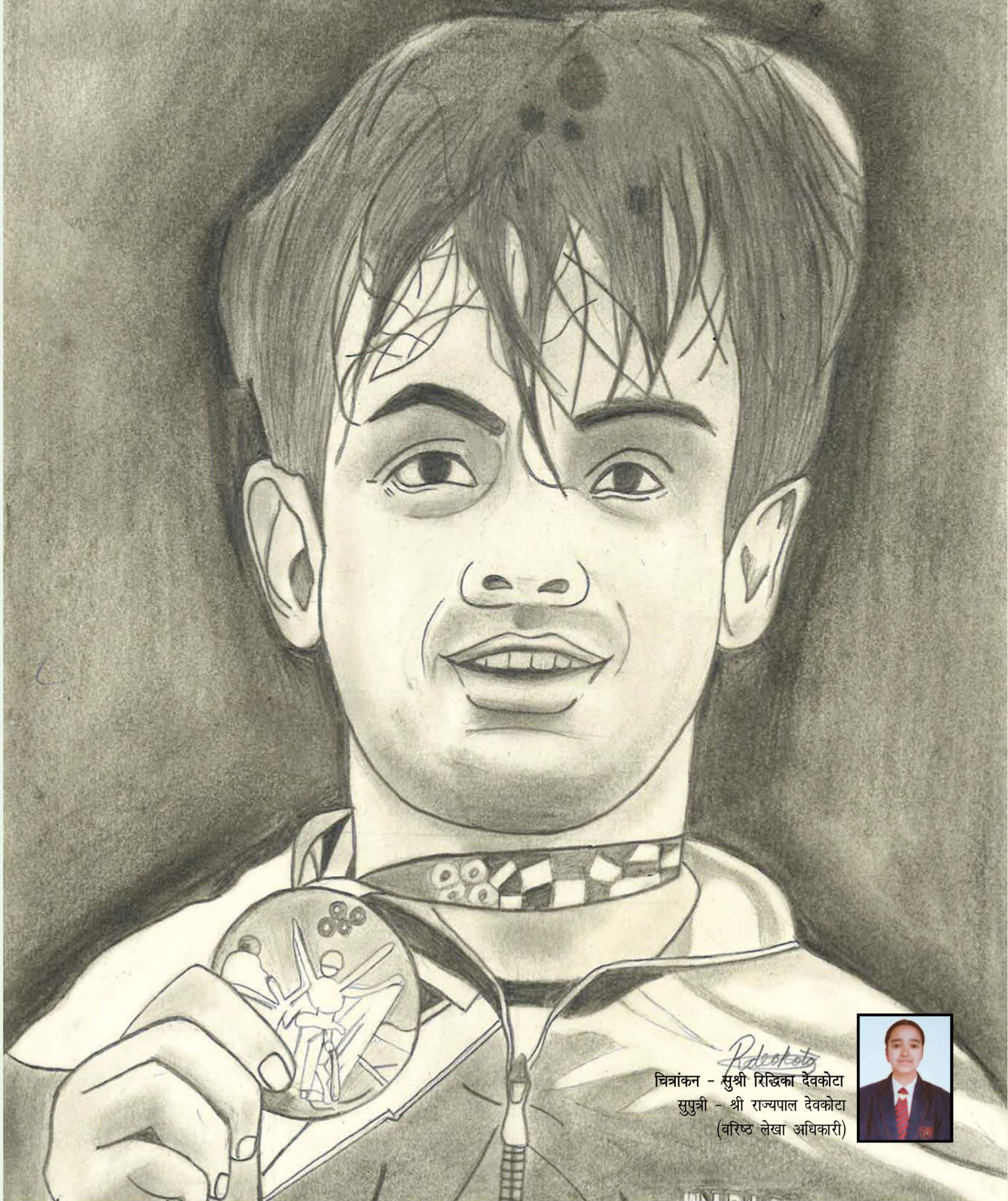
‘मिसाइल मैन’ - ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



चित्रांकन - सुश्री रिद्धिका देवकोटा
सुपुत्री - श्री राज्यपाल देवकोटा
(वरिष्ठ लेखा अधिकारी)



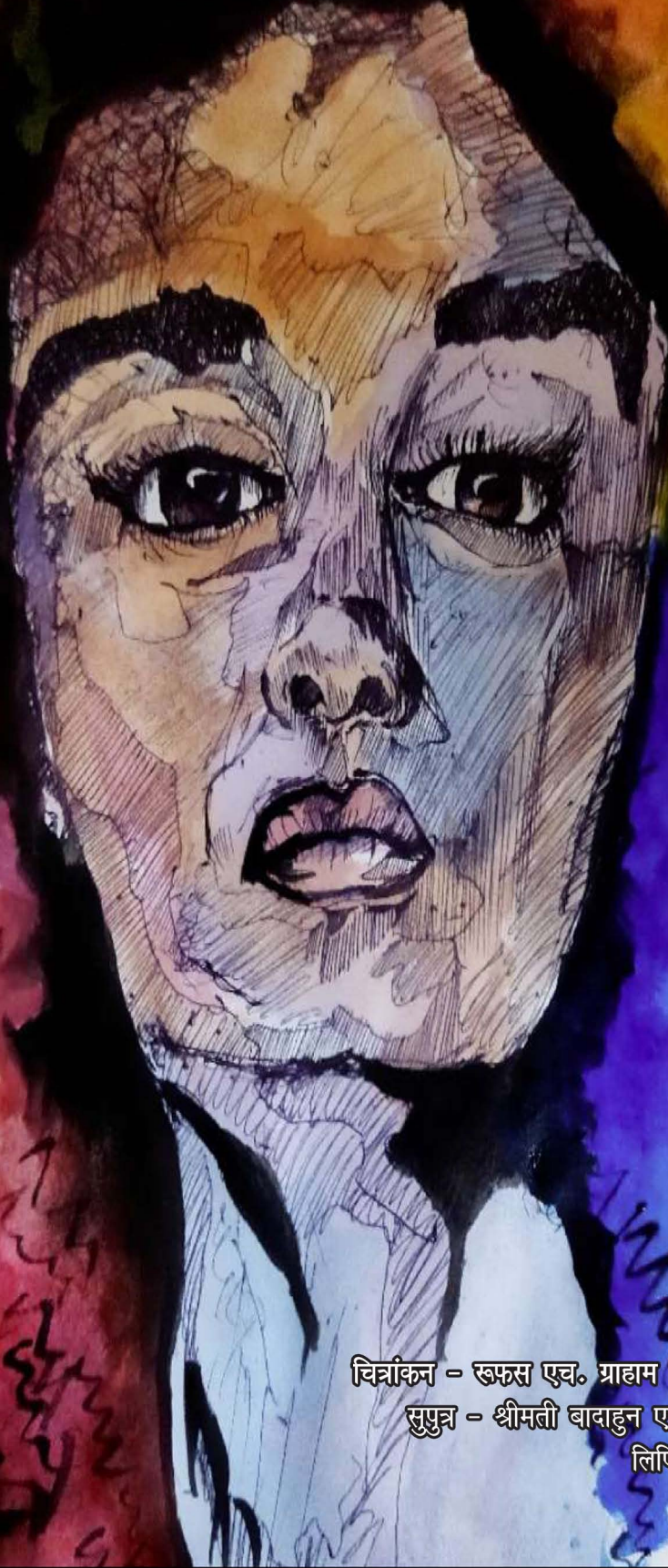
‘गोल्डन बॉय’ - नीरज चोपड़ा



चित्रांकन - सुश्री रिद्धिका देवकोटा
सुपुत्री - श्री राज्यपाल देवकोटा
(वरिष्ठ लेखा अधिकारी)



‘स्त्री सशक्तिकरण’



चित्रांकन - रुफस एच. ग्राहाम डियेंगदोह
सुपुत्र - श्रीमती बाबाहुन एस. नोंगुम
लिपिक/टंकक



‘प्राकृतिक दृश्य’

सुश्री सविता चक्रवर्ती
डी.ई.ओ. (बहिःस्रोत)



A decorative illustration of pink cherry blossoms on a green branch, located in the bottom right corner of the page. The illustration features several pink flowers with yellow centers and green leaves, rendered in a simple, stylized manner.



A decorative graphic in the bottom right corner featuring pink cherry blossoms and green leaves on a branch, set against a light green background.

कोई नहीं भाता

मुक्तक

श्री सुरेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी



ज़रूरत चीज़ है ऐसी, जो सब कुछ तोल देती है,
ज़माने भर की खामोशी को, पल में तोड़ देती है।।
हमें मालूम है कुछ भी नहीं, इस खाक दुनिया में,
मगर जो दर्द है दिल में, आँखों से बोल देती है।।

तुम्हें मालूम है कितना, तुम्हीं से प्यार करते हैं,
पता है कि ये गलती है, मगर हर बार करते हैं।।
हमें डर है ज़माने का, मगर सुन ले मेरे हमदम,
इन आँखों के झरोखों से, तेरा दीदार करते हैं।।

तमन्ना एक है ऐसी, जिन्हें हम याद करते हैं,
बिना जिसके ना सुबह हो ऐसी, फरियाद करते हैं।
दुआओं में जिसे मांगा, अताओं में जिसे चाहा,
ये मेरी खुशनसीबी है, उसी के साथ रहते हैं।।



श्री प्रेम कुमार
आशुलिपिक



क्या कहें, क्या सुने, कुछ समझ नहीं आता,
आलम ये है कि अब कोई दिल को नहीं भाता।
जिसे देखकर करते थे कभी दिन की शुरुआत,
क्या कहें, कि अब वो चेहरा रास नहीं आता।
कभी रूठना, कभी मनाना, ये तो बस यादें हैं,
कभी किए थे जो वादे, वो सारे झूठे वादे हैं।
कोई तो बताए क्या करें, जो मैं इन्हें भूल जाता,
आलम ये है कि अब कोई दिल को नहीं भाता।
कभी हँस के, तो कभी गुस्से में, वो मनाती थी हमें,
गर जो कुछ भूल जाऊँ, तो याद दिलाती थी हमें।
अब ना तो कोई रिश्ता है, और ना ही कोई नाता,
आलम ये है कि अब कोई दिल को नहीं भाता।
अब ना कोई उम्मीद है उनसे, ना ही कोई आशा,
दिखते हैं बस गमों के बादल, और छाई है निराशा।
फूलों की उम्मीद क्या करें, जब किस्मत में है कांटा,
आलम ये है कि अब कोई दिल को नहीं भाता।



माँ

श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.

कनिष्ठ अनुवादक



‘माँ’ शब्द सुनते ही हम सबके मन में एक मुस्कुराती हुई, प्यार भरी छवि उभर कर आती है ना। कभी-कभी माँ की याद में खुशी भी होती है और कभी-कभी आँखें भी भर आती हैं। यहाँ मैं अपने बचपन का एक किस्सा बताना चाहती हूँ, जिसमें मुझे वह पल याद करके खुशी भी हो रही है, साथ ही मेरी आँखें भी नम हैं क्योंकि आज मेरी माँ मेरे साथ नहीं है। लेकिन उनके जाने के बाद भी मुझे कई बार ये एहसास हुआ है कि वो मेरे साथ ही हैं। एक-एक दिन बीतने के साथ-साथ मैं बिल्कुल अपनी माँ जैसी बनती जा रही हूँ। आज मैं अपने बच्चों से वही सब कहती हूँ जो कभी माँ मुझसे बोला करती थी। अच्छा, अब उस किस्से की तरफ चलते हैं, जो मैं आप सबको बताने आई थी।

यह तब की बात है जब मैं तीसरी क्लास में थी। गर्मियों की छुट्टियों के बाद स्कूल खुले ही थे। स्कूल से किसी चीज़ की फीस के लिए पंद्रह रुपए मांगे गए थे। पैसे देते वक्त माँ ने कहा कि, “कहीं खो मत देना, सीधे स्कूल जाकर अपनी मैम को दे देना”। मैंने भी हाँ में सिर हिलाया और स्कूल चली गई। शाम को माँ इस बारे में मुझसे पूँछना भूल गई और उनको याद आया अगले दिन, जब वो मुझे स्कूल भेजने के लिए नहला रही थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि, “कल पैसे मैम को दे दिए ना”। अब मैं फँस गई, क्योंकि उस दिन मैम स्कूल आई नहीं थी और मैं यह भूल गई कि मैंने वो पैसे रखे कहाँ थे। ये सुनकर हर एक माँ की तरह, मेरी माँ ने भी मेरी जम के धुलाई की। उस दिन मेरा रोता हुआ चेहरा देखकर मेरे पापा और मेरी बुआ दोनों माँ से बहुत नाराज़ हुए।

मेरे स्कूल जाने के बाद कपड़े धोते वक्त माँ को वो पैसे मेरी स्कर्ट की जेब से मिले। उनको मुझे बिना वजह मारने की बात से बहुत दुख हो रहा था। इसलिए मेरे लिए नींबू पानी बनाकर वो मेरी राह देख रही थी। पापा कुछ पड़ोसियों के साथ बैठकर बातें कर रहे थे कि तभी मेरी सहेलियाँ भागते हुए घर पहुँची और बताया कि रास्ते में मेरा एक्सिडेंट हो गया है। मेरी माँ को हाई बी.पी. की प्रोब्लम थी इसलिए पापा ने हमारी पड़ोस वाली आंटी से कहा कि मेरी माँ का ध्यान रखें। लेकिन मेरी माँ तो मेरे एक्सिडेंट की खबर सुनकर उन सबसे पहले अस्पताल की तरफ भाग चुकी थी।

मेरे माथे और पैरों पर चोट लगी थी और माथे से खून मेरी आँख के ऊपर से बह रहा था। जैसे ही मेरी माँ वहाँ पहुँची तो उन्हें लगा कि मेरी आँख में चोट लगी है। वो बेचारी वहीं गिर गई। तब तक पापा और हमारे पड़ोसी भी आ गए। माँ के रोने की आवाज़ से आते-जाते लोगों से उस छोटे से क्लीनिक में भीड़ लग गई। थोड़ी देर बाद माँ को अपने हाथ-पैरों में कुछ अजीब सा महसूस होने लगा। उन्होंने किसी तरह पास खड़ी आंटी को इशारा किया लेकिन तब तक उनके हाथ-पैर एक तरफ मुड़ चुके थे। डॉक्टर ने पापा से कहा कि माँ का बी.पी. बहुत बढ़ गया है और उनके हाथ-पैर

सीधे पकड़कर ठीक से मालिश नहीं कि तो वो ठीक नहीं हो पाएंगे। वहाँ खड़े हर किसी ने पापा की मदद की और लगभग डेढ़ घंटे बाद माँ की हालत सुधरी।

मेरा एक्सिडेंट उस दिन 1 बजे हुआ था, मुझे 3 बजे घर लेकर आए और माँ को 5 बजे। घर आकर मेरी माँ मुझे गले लगाकर बहुत रोई। मुझसे कह रही थी कि अब मुझे कभी नहीं मारेंगी, हालाँकि मार तो मैंने उसके बाद भी बहुत खाई है। उस दिन जब बुआ ऑफिस से लौटी तो मेरी हालत देखकर वह माँ से लड़ने के लिए अंदर गई लेकिन फिर माँ को देखा तो चुप रह गई।

उस दिन माँ के प्यार का एक नया रूप देखा था मैंने। इतना तो समझ आ गया था कि अगर मुझे एक खरोच भी लग जाए ना, तो उनकी जान निकल जाएगी। हाँ, उस प्यार की भावना और गहराई मुझे तब समझ आई जब मैं खुद एक माँ बनी। बेचारी मेरी माँ उस दिन कितना डर गई होगी। उस दिन से हम सब ने ये हमेशा ख्याल रखा कि कभी भी उनके दिल को चोट ना पहुँचे क्योंकि हम भी उनसे उतना ही प्यार करते थे और आज भी करते हैं। बस एक अफसोस रह गया कि मेरी माँ का वो प्यार मेरी बेटियों को नसीब नहीं हुआ।

आज मैं हर हालत में खुश रहने की कोशिश करती हूँ, ताकि मेरी माँ, वो जहाँ भी हो, खुश रहें।



खुद के लिए खड़ी स्त्री



श्रीमती मेघा रानी
पत्नी - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

खामोशियाँ टूटीं, आवाज अब उठी है,
जो सदियों से दबी थी, वो पुकार अब मची है।
नजरें नहीं झुकीं, अब वो सीधी खड़ी है,
अपनी राह खुद चुनने को, वो अटल अड़ी है।
जंजीरें तोड़कर, पंख अब उसने खोले हैं,
आसमान छूने को, हौसले अब उसने तोले हैं।

कभी देवी सी पूजी, कभी पैर की जूती,
बदला है दौर, अब वो नहीं कोई मूर्ती।
अपने सम्मान को, वो खुद अब समझेगी,
कोई और नहीं, अपनी कहानी वो गढ़ेगी।
हर जुल्म के आगे, अब वो नहीं झुकेगी,
हर अन्याय का, वो डटकर सामना करेगी।

समाज की बेड़ियाँ, वो अब नहीं मानेगी,
रुढ़ियों की दीवारें, वो तोड़कर पहचानेगी।
अपनी पहचान को, वो खुद अब खोजेगी,
खुली हवा में साँस लेकर, वो खुद अब जिएगी।
ना किसी की मोहताज, ना किसी की परवाह,
अपनी मंजिल पाने को, वो खुद बनाएगी राह।

कई बार वो गिरी, पर उठना भी जाना है,
दर्द से वो गुजरी, पर मुस्कुराना भी जाना है।
आँसू पोछकर अपने, वो आगे बढ़ी है,
हर चुनौती से लड़ने को, वो अब तैयार खड़ी है।
अकेली नहीं है वो, साथ है उसकी हिम्मत,
अंदर की शक्ति, है उसकी सबसे बड़ी दौलत।

अब डर नहीं उसे, किसी की भी धमकी का,
अंधेरों से लड़कर, वो बन गई है रोशनी का।
नारी शक्ति का, वो अब नया प्रतीक है,
हर बेटी, हर बहन को, वो देती सीख है।
अपनी आवाज बनकर, वो गूँज रही है,
खुद के लिए खड़ी, वो जीत रही है।

तो सुनो ऐ दुनिया, ये नयी शुरुआत है,
जब नारी स्वयं खड़ी, तो हर बाधा मात है।
सम्मान दो उसे, या झेल लो आक्रोश,
क्योंकि अब वो नहीं रुकेगी, वो है आत्मविश्वास।
नया सवेरा आया है, नयी किरण खिली है,
खुद के लिए खड़ी स्त्री, अब हर जगह मिली है।



कर्म ही धर्म

बारिश

श्रीमती आकांक्षा पटेल
पत्नी - श्री सुरेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी



आसमान में बादल छाए,
वर्षा का मौसम है लाए,
देखो सावन थिरक रहा है,
झूम-झूम कर बरस रहा है,
देखो चिड़ियों की मुस्कान,
जैसे आई उनमें जान,
काले बादल गरज रहे हैं,
जैसे फटने को तरस रहे हैं,
हवा की रुख भी है तूफानी,
लिखेंगे ये नई कहानी,
नहीं है कोई मौसम ऐसा,
नटखट हो जो बारिश जैसा,
फसल भी देखो खूब लहराए,
बूँद के रूप में अमृत पाए,
जीव-जन्तु सब राहत पाए,
आसमान में बादल छाए।



श्रीमती बेथेल लिंगा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार



सूरज निकला अब सब जागो,
अपने-अपने काम पर भागो।

पहले स्नान, शौच आदि कर्म,
उसके बाद झटपट धर्म।

उनके नाम पर कर्म हमारा,
उनके धाम पर लक्ष्य हमारा।

रचना उनकी ये सब जगत,
हमको बनना उनका भगत।

पूजा समझकर कर्तव्य करो,
मानव हित की लड़ाई लड़ो।



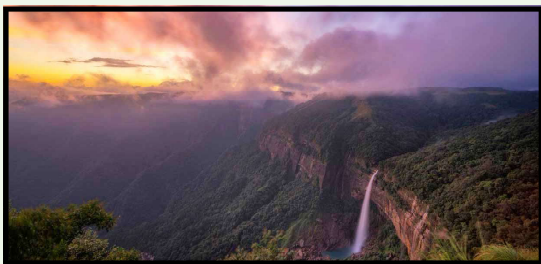
रिश्ते की उलझन

मेघालय

श्री प्रेम कुमार
आशुलिपिक



कहीं नदी, कहीं पहाड़, कहीं झरनों की रवानी है,
ये मेघालय है जनाब, यहाँ की बात निराली है।
कहीं गारो, कहीं खासी, कहीं जयंतीया पहाड़ी है,
अगर जो गौर से देखें, तो सबकी एक ही कहानी है।
कहीं सर्दी, कहीं गर्मी, कहीं वर्षा का पानी है,
मिले सुकून यहाँ आकर, यहाँ की रूत सुहानी है।
कहीं जंगल, कहीं गुफा, कहीं पतझड़ निशानी है,
ये कुदरत का करिश्मा है, जो दुनिया इसकी दीवानी है।
कभी सुख में, कभी दुख में, तो कभी ऐसे ही चले आओ,
भूल जाएंगे सारे गम, दो कदम इन वादियों में तो बढ़ाओ।
कभी हँस के, कभी रो के, जो दिन गुजारे हैं,
गमों को दूर करने को, यहाँ की शाम निहारे है।
कहीं उगता सूरज, कहीं ढलती शाम, कहीं रात मस्तानी है,
कौन है जो इन्हें पिरोता है, ये किसकी कारस्तानी है।
कहने को कुछ भी कह लो, सबकी यही जुबानी है,
ये मेघालय है जनाब, यहाँ की बात निराली है।



श्री गौतम वर्मा
सहायक लेखा अधिकारी



कभी-कभी तो इतना प्यार करते हो,
जैसे मैं जिंदगी हूँ तुम्हारी।
और कभी-कभी तो ऐसे ठुकरा देते हो,
जैसे मैं कुछ भी नहीं हूँ तुम्हारी।

कभी-कभी तो अपनी जिंदगी का,
अभिन्न अंग बना लेते हो मुझे।
और कभी-कभी तो ऐसे भुला देते हो,
जैसे कोई अधूरी याद हूँ मैं तुम्हारी।

कभी बातों में छुपा लेते हो जजूबात मेरे,
कभी खामोशियों में डुबा देते हो आवाज मेरी।
कभी आँखों से पढ़ लेते हो हर दर्द मेरा,
और कभी देख कर भी नजरें चुरा लेते हो मेरी।

ये कैसा रिश्ता है, जो हर पल बदलता है,
कभी सुकून, तो कभी दर्द में ढलता है।
मैं ठहर जाना चाहती हूँ तुम्हारे दिल में,
पर तुम हो कि हर मोड़ पर बदल जाते हो।



G20 शिखर सम्मेलन : वैश्विक आर्थिक सहयोग का एक मंच



रुफस एच. ग्राहाम डियेंगदोह
सुपुत्र - श्रीमती बादाहुन एस. नोंग्रुम
लिपिक/टंकक

G20 शिखर सम्मेलन एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच है जिसमें 19 देशों और यूरोपीय संघ की सरकारें और केंद्रीय बैंक गर्वनर शामिल होते हैं। ये सदस्य वैश्विक जी.डी.पी. का लगभग 85% और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 75% से अधिक प्रतिनिधित्व करते हैं। G20 की स्थापना 1999 में वैश्विक आर्थिक मुद्दों जैसे वित्तीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को संबोधित करने के लिए की गई थी।

हर वर्ष, कोई एक सदस्य देश G20 की अध्यक्षता करता है और शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है। वही, देश एजेंडा तय करता है और चर्चा का नेतृत्व करता है, साथ ही कुछ अतिथि देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों को भी आमंत्रित करता है। यह सम्मेलन विश्व नेताओं, वित्त मंत्रियों और नीति विशेषज्ञों को एक साथ लाता है ताकि वे चुनौतियों पर सहयोग करें और समन्वित समाधान निकाल सकें।

हाल के वर्षों में, G20 शिखर सम्मेलन ने महामारी के बाद की पुनर्प्राप्ति, जलवायु कार्रवाई, डिजिटल परिवर्तन और समावेशी आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। यह विकसित और विकासशील देशों के बीच सेतु की भूमिका निभाता है।

हालांकि का G20 कोई स्थायी सचिवालय नहीं है, फिर भी इसके सदस्य देशों के आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव के कारण इसका वैश्विक स्तर पर बड़ा प्रभाव है। G20 शिखर सम्मेलन वैश्विक अर्थव्यवस्था की दिशा तय करने और विश्व शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



खूबसूरती

श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.

कनिष्ठ अनुवादक



‘खूबसूरती’ शब्द के लिए सबका अपना-अपना मतलब होता है। लेकिन रंग-रूप का मापना-तोलना कभी-कभी किसी के लिए दर्द का कारण भी बन जाता है। हमारे आस-पास ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें लोगों के रूप, रंग, आकार आदि पर टीका-टिप्पणी करने में बड़ा मजा आता है। लेकिन वो कभी नहीं सोचते कि उनके इस मजे की वजह से सामने वाले पर क्या बीत रही है, उसके दिल को कितनी ठेस पहुँच रही है। इस टीका-टिप्पणी को अंग्रेजी में ‘बॉडीशेमिंग’ कहते हैं, और जिस समाज में हम जी रहे हैं, हममें से कई लोगों को जिंदगी में कभी ना कभी तो इसका सामना करना पड़ा होगा।

‘बॉडीशेमिंग’ का शिकार तो लगभग सभी होते हैं, लेकिन लड़कियों को इसका ज्यादा सामना करना पड़ता है। क्योंकि शादी के मार्केट में लड़की के गुणों से अधिक उनके रंग-रूप को ध्यान में रखा जाता है। वजन ज्यादा हो तो, उनके खाने-पीने पर ताना मारा जाता है, पतले हो तो, माचिस की तीली से तुलना की जाती है। काले हो तो कोई मुड़ कर भी ना देखे, और अगर गोरे हो तो एक छोटा सा दाग भी बर्दाश्त नहीं होता। कद छोटा हो तो मुसीबत, लंबे हो तो मुसीबत। ऐसे कितने मानदण्डों का सामना करना पड़ता है। पर जो बेचारे इन सब से जूझ रहे होते हैं, वह धीरे-धीरे अपना आत्मसम्मान खो देते हैं। खुद से नफरत करने लगते हैं। उन सारे नुस्खों का इस्तेमाल करते हैं जिससे शायद बोलने वालों के सामने अपनी छवि बदल सकें। लेकिन इन सबके बीच वे जीना भूल जाते हैं और कभी-कभी हार भी जाते हैं।

ऐसे लोगों से मैं बस इतना कहना चाहती हूँ कि ईश्वर ने हमें एक अनमोल जिंदगी दी है, उससे प्यार करना सीखें, खुद से प्यार करना सीखें। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। हर व्यक्ति अपने आप में खूबसूरत है। खूबसूरती का कोई मापदण्ड नहीं है। तन की खूबसूरती से ज्यादा मन की खूबसूरती मायने रखती है। इसलिए खुद के लिए जिएं, अपने नियमों से जिएं, और तब बदलिए जब स्वयं एक बदलाव की ज़रूरत महसूस हो, ना कि किसी और को संतुष्ट करने के लिए। जब हम अपने आप से प्यार करेंगे तब ही दूसरों को भी प्यार दे पाएंगे, खुश रह पाएंगे।



हिंदी का दीप जलाएँ



श्रीमती बादाहुन एस. नोंग्रुम
लिपिक / टंकक

हिंदी हैं आत्मा भारत की,
गूँजे सुर जैसे सरगम की।
जिसने जोड़ा देश को सारा,
उत्तर से दक्षिण, पूरब-पश्चिम किनारा।

मीठी इसकी बोली लागे,
हर दिल को ये छूती भागें।
बच्चा-बच्चा बोलें हिंदी,
यही तो है हमारी हिंदी।

कभी कहानी, कभी विचार है,
हिंदी में अपार प्यार है।
जनमन की यह सच्ची भाषा,
ले चलती है संस्कृति आशा।

भूल न जाएँ अपनी जड़ को,
संभालें हम इस अमूल्य वर को।
चलिए सब मिल संकल्प उठाएँ,
हर घर हिंदी दीप जलाएँ।

पखवाड़ा हो एक उत्सव प्यारा,
हिंदी को दे मान दोबारा।
हिंदी बढ़े, देश बढ़े,
हर कोना अब रोशन खड़े।



मानवता की मिसाल

श्री घनश्याम कुमार
भाई - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी



एक बार की बात है, उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव में राजू नाम का एक गरीब किसान रहता था। उसका परिवार बहुत छोटा था - उसकी पत्नी सीमा और पाँच साल का बेटा गोपाल।

राजू मेहनत से खेतों में काम करता, लेकिन मौसम की मार और कर्ज ने उसे तोड़ दिया था। एक दिन अचानक गोपाल बहुत बीमार पड़ गया। डॉक्टर ने बताया कि उसे शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना होगा, नहीं तो उसकी जान को खतरा हो सकता है। राजू के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह शहर जाकर इलाज करवा सके।

राजू को कुछ सूझ नहीं रहा था। वह गाँव के चौपाल पर बैठा उदास था। तभी गाँव का एक बूढ़ा आदमी, रहमत चाचा, जो खुद भी ज्यादा पैसे वाले नहीं थे, पास आए। उन्होंने राजू की आँखों में आँसू देखे और सच्चाई पूछी। सारी बात जानकर रहमत चाचा ने बिना सोचे अपने जीवनभर की जमा पूँजी, जो उन्होंने अपनी बेटी की शादी के लिए रखी थी, राजू को दे दी।

राजू ने आश्चर्य से पूछा, “चाचा, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? ये तो आपके अपने घर के लिए हैं!”

रहमत चाचा मुस्कराए और बोले, “बेटा, इंसानियत सबसे बड़ा धर्म है। एक बच्चे की जान बचाना, मेरे लिए किसी भी शादी से बढ़कर है। अल्लाह और भगवान एक ही बात सिखाते हैं - मदद करो, जहाँ जरूरत हो।”

राजू ने उनके पैरों पर गिरकर धन्यवाद किया और शहर जाकर अपने बेटे का इलाज कराया। गोपाल धीरे-धीरे ठीक हो गया। कुछ महीने बाद जब रहमत चाचा के बेटी की शादी तय हुई, तो पूरा गाँव एकजुट होकर चाचा की मदद करने आया - किसी ने खाने की व्यवस्था की, किसी ने कपड़े दिए, तो किसी ने पैसे।

इस कहानी ने पूरे गाँव को सिखाया कि जात-पात, धर्म, अमीरी-गरीबी से ऊपर है - मानवता। मानवता एक ऐसी लौ है, जो दिलों में उजाला कर जाती है, चाहे दुनिया कितनी भी अंधेरी क्यों न हो।



तारे

हिंदी

सुश्री दिव्या कुमारी राय
सुपुत्री - श्री नवल किशोर राय
एम.टी.एस.



अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते हैं,
अंग्रेजी बोलने से भी घबराते हैं,
पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं,
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं,
एक वक्त था जब हमारे देश में हिंदी का बोलबाला था,
मां की आवाज में भी सुबह का उजाला था,
उस मां को अब हम मॉम बुलाते हैं,
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं,
देश आगे बढ़ गया पर हिंदी पीछे रह गई,
इस भाषा से अब हम नजर चुराते हैं,
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं,
माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है,
पर हिंदी भी तो हमारी पहचान दुनिया से कराती है,
क्यों न अपनी मातृ भाषा को फिर से सर आँखों पर बिठाए,
आओ हम सब मिलकर हिंदी दिवस मनाए।

श्रीमती बेथेल लिंगा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार



चम-चम, चम-चम, चमको तारे,
नील गगन में तुम हो प्यारे।

निकलते हो तुम रातों में किंतु,
छोटे-से हो, आश्चर्यजनक बिंदु।

दी तुम्हें ये उज्ज्वल ज्योति जिसने,
हमें भी दी है जीवन ज्योति उसने।

चमकते ही रहो रातों में तुम,
समझ सकें उनकी सारी बातें हम।

न भूलूँ मैं यह सृजन उसका,
गाता ही रहूँ मधुर गीत उसका।



माँ का स्नेह



श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

एक नन्ही कली सी जब आँगन में खिली,
माँ की आँखों में एक नई दुनिया मिली।
छोटे-छोटे कदम, वो पहली किलकारी,
माँ के दिल में बसी, वो हर खुशी प्यारी।
हर पल उसको सँवारा, हर दुख से बचाया,
अपनी ममता की छाँव में उसको बड़ा बनाया।

जब वो लड़खड़ाता, माँ का हाथ थामता,
गिरकर उठना, वो माँ से ही सीखता।
हर चोट पे मरहम, हर आँसू पे दुलार,
माँ का आँचल ही तो है उसका संसार।
रातों को जगकर, लोरी सुनाती,
माँ की गोद में ही तो वो सपने सजाती।

धीमे-धीमे वो बड़ा होता जाता,
नयी बातें सीखता, सवाल उठाता।
माँ उसकी पहली गुरु, पहली सहेली,
सुलझाती हर पहेली, हर अनसुलझी बात।
सही-गलत का ज्ञान, मूल्यों की सीख,
माँ के संस्कारों से ही तो बनती उसकी नींव।

कभी गुस्सा होता, कभी रूठ जाता,
माँ का प्यार उसे फिर से मनाता।
उसकी हर जिद को प्यार से सहती,
पर अनुशासन की डोर भी कस के रखती।
भविष्य के लिए उसको तैयार करती,
माँ की दुआएँ हर पल साथ रहती।

पंख लगे अब उड़ने को तैयार है वो,
माँ का दिल थोड़ा घबराता, पर खुश है वो।
दूर जाएगा, अपनी राह बनाएगा,?
पर माँ का प्यार कभी न भुला पाएगा।
क्योंकि वो जानती है, ये बंधन है गहरा,
माँ और बच्चे का, अटूट और सुनहरा।

वो बढ़ता है, सफलताएँ पाता है,
पर माँ की याद में ही सुकून पाता है।
माँ की सीख, वो प्यार भरा एहसास,
जीवन की हर डगर पे देता है विश्वास।
माँ का होना ही तो है सबसे बड़ा वरदान,
जिससे बढ़ता है बच्चे का सम्मान और स्वाभिमान।



मेघालय के खासी जनजाति के खान पान

श्रीमती सिग्धा फुकन
सहायक निदेशक (राजभाषा)

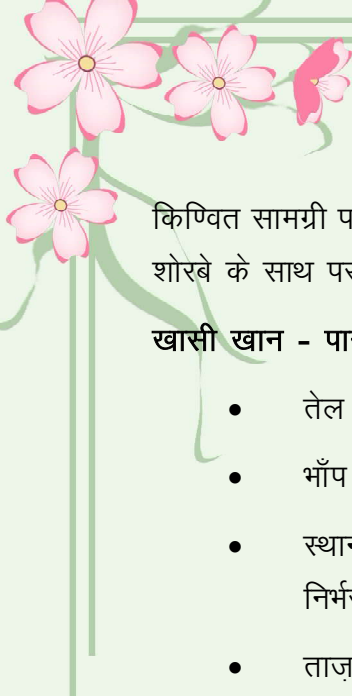
पूर्वोत्तर के राज्य मेघालय अपनी हरी भरी पहाड़ियों, स्वच्छ निर्मल नदियों और झरनों के लिए प्रसिद्ध है। मेघालय का पारंपरिक भोजन भी इसकी प्राकृतिक सुन्दरता जैसा समृद्ध और विविध है। यहाँ की खाद्य संस्कृति खासी, गारो और जयंतीया जनजातियों के प्रभावों का एक सुंदर संमिश्रण है, जो प्रत्येक व्यंजन में कुछ न कुछ विशेषता लेकर आती है।

खासी व्यंजन, खासी जनजाति की परंपराओं और जीवनशैली का प्रमाण है। खासी परंपरा में रसोई को एक पवित्र स्थान माना जाता है, और इसके तथा इसमें पकाए गए भोजन के प्रति सम्मान दिखाने के लिए कई तरह की प्रथाएँ प्रचलित हैं। इन परंपराओं में, रसोई के रखरखाव में व्यावहारिक स्वच्छता और घर के अंदर रसोई स्थान और भोजन के प्रति सम्मान बनाए रखना शामिल है। खासी जनजाति अपने रसोई घर में दैनिक सफाई, बर्तनों की उचित व्यवस्था बनाए रखते हैं। यह लोक प्रचलित है कि रात के आहार ग्रहण करने के बाद रसोई से गंदगी समेटकर बाहर फेंकनी नहीं चाहिए, अपशकुन होता है। उसे घर के एक कोने में रखना चाहिए, सुबह फेंकने के लिये। पारंपरिक मान्यता के अनुसार, रात्रि भोजन के उपरांत, बर्तन में कुछ अन्न को छोड़ना आवश्यक है जिससे रसोई घर की मर्यादा बनी रहे और घर में अन्न की कमी न रहे।

खासी व्यंजनों में बांस के अंकुर और किण्वित (Fermented) सोयाबीन जैसी सामग्री से बने अनोखे व्यंजन होते हैं, जो स्वाद में एक तीखा, उमामी स्वाद पैदा करते हैं। स्थानीय रूप से उपलब्ध उत्पादों का व्यंजनों में उपयोग खासी इतिहास और परंपरा को दर्शाता है। मसालों का इस्तेमाल कम लेकिन प्रभावी ढंग से किया जाता है। यहाँ इस्तेमाल होने वाले मसालों में से सरसों के बीज तीखापन देते हैं, काली मिर्च गर्माहट देती है, हरा धनिया, हरा मीर्च और अदरक स्वाद लाता है। खासी व्यंजन सरल लेकिन स्वादिष्ट व्यंजन होते हैं।

खासी पारंपरिक भोजन में मांस-केंद्रित व्यंजन जैसे जाडोह (जा = चावल + डोह = मांस), डोहख्ली (शूकर के सर के मांस का सलाद), और डोहनेइऑंग (उत्सव में पकाया जाने वाला का व्यंजन) शामिल हैं, साथ ही पुमालोई और पुथारो (उबले हुए और चपटे चावल के पिठा) जैसे नाश्ते भी शामिल हैं। शिलांग के जाडोह केवल एक भोजन ही नहीं, यह खासी लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रवेश द्वार है। मेघालय की हरी-भरी पहाड़ियों में बसा खासी जनजाति के विविध व्यंजनों में स्थानीय परंपराओं, मौसमी उपज और प्रकृति के प्रति अगाध सम्मान गहराई से समाया हुआ है। किण्वित सामग्री, बांस और स्थानीय सब्जियाँ आम हैं, और तूरोमबाई (किण्वित सोयाबीन की चटनी) और उबली हुई सब्जियाँ जैसे व्यंजन भी उनके व्यंजनों का हिस्सा हैं। खासी व्यंजन धुएँदार (स्मोकी), पौष्टिक, मांसाहारी व्यंजनों से लेकर किण्वित खाद्य पदार्थों के हल्के स्वाद तक, हर निवाला एक जुड़ाव की कहानी कहता है — ज़मीन, मौसम और समुदाय से जुड़ाव की कहानी।

खासी व्यंजन, अपनी संस्कृति की तरह, सरल लेकिन बहुस्तरीय होते हैं। आदिवासी जीवनशैली से प्रभावित, यह भोजन ज्यादातर मांसाहारी होता है और इसमें मांस, खासकर शूकर का मांस, धुएँदार (स्मोकी) व्यंजन और



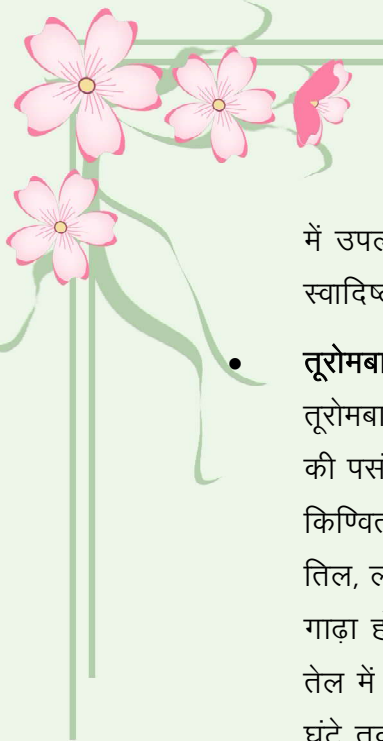
किण्वित सामग्री पर जोर दिया जाता है। चावल यहाँ का मुख्य अनाज है, जिसे अक्सर स्वादिष्ट चटनी, ग्रेवी और शोरबे के साथ परोसा जाता है।

खासी खान - पान की मुख्य विशेषताएँ:

- तेल और मसालों का न्यूनतम उपयोग।
- भाँप में पकाने, भूनने या धीमी आँच पर पकाने को प्राथमिकता।
- स्थानीय जड़ी-बूटियों जैसे जा-स्टेम (सुगंधित अदरक), काले तिल और बाँस के अंकुरों पर निर्भरता।
- ताज़गी और मौसम पर विशेष जोर।

प्रमुख मांस – आधारित व्यंजन

- **जाडोह:** एक लोकप्रिय व्यंजन जिसे अक्सर मेघालय बिरयानी भी कहा जा सकता है। स्थानीय चावल और शूकर के चरबी अथवा मुर्गी की चर्बी से बनाया जाता है।
- **डोहख्ली:** यह एक विशिष्ट खासी व्यंजन है, जिसे शूकर के मांस से भी बनाया जाता है। यह व्यंजन अपने स्वादिष्ट और ताज़ा स्वाद के कारण खासी और गैर-खासी लोगों के बीच भी बहुत लोकप्रिय है। शूकर का मांस इसका मुख्य सामग्री है। डोहख्ली और कुछ नहीं बल्कि शूकर के मांस का सलाद है, जिसे पके हुए शूकर के मांस और नींबू के रस के साथ बारीक कटे प्याज, हरी मिर्च, अदरक के साथ मिलाकर बनाया जाता है, जिससे इसका स्वाद और भी बढ़ जाता है।
- **डोहनेइऑंग:** एक उत्सवी व्यंजन, खासी लोगों के बीच विशेष अवसरों पर खाया जाने वाला एक पसंदीदा व्यंजन।
- **डोह सियार या डोह स्नियांग नेई-इऑंग:** यह व्यंजन, चिकन अथवा शूकर के मांस और करी का एक स्वादिष्ट मिश्रण है। डोह सियार या डोह स्नियांग नेई-इऑंग, यानी तिल के साथ पकाया गया मुर्गी अथवा शूकर का मांस का एक आम व्यंजन है। उबले हुए चावल के साथ परोसे जाने वाले इस व्यंजन का स्वाद मुँह में पानी ला देता है।
- **डोह जेम:** यह शूकर की अंदरूनी हिस्सों के मिश्रण से बना एक स्वादिष्ट खासी व्यंजन है। शूकर के आंतों, जिसमें बारीक कटा हुआ मांस, चर्बी और त्वचा होती है, उसे इस व्यंजन के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इसे पारंपरिक मसालों और जड़ी-बूटियों के मिश्रण से पकाया जाता है, जिससे एक स्वादिष्ट शूकर की करी बनती है। इस व्यंजन के लिए मांस का कट बहुत महत्वपूर्ण है और इससे समझौता नहीं किया जाना चाहिए।
- **फान और तुंगताप:** उबले हुए आलू या फान के साथ खाई जाने वाली सूखी मछली की चटनी या तुंगताप, बच्चों और बड़ों, सभी को पसंद आती है। प्याज, सूखी मिर्च और लाल मिर्च के साथ भुनी हुई सूखी मछली की धुँएदार सुगंध, आलू की मिठास एवं जा-उद (एक तरह का पत्ता जो मेघालय



में उपलब्ध) तथा जिल्लांग (एक प्रकार का लहसुन जैसा स्वाद वाला पत्ता) के साथ मिलकर इस स्वादिष्ट व्यंजन के स्वाद को और भी बढ़ा देती है।

- **तूरोमबाई :** तूरोमबाई एक खासी पारंपरिक चटनी है, जो किण्वित सोयाबीन से बनाई जाती है। तूरोमबाई का एक समृद्ध इतिहास है, जो मेघालय के लगभग हर घर में बनाई जाती है। यह लोगों की पसंदीदा चटनी है। तूरोमबाई को शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह से बनाया जा सकता है। किण्वित सोयाबीन इसकी मुख्य सामग्री है। आमतौर पर इसे उबालकर पकाया जाता है। काला तिल, लहसुन, प्याज, अदरक भुनकर इसे बाद में पीसकर पेस्ट बना लिया जाता है। पेस्ट न तो बहुत गाढ़ा होना चाहिए और न ही बहुत पतला। अच्छी तरह से पीस लेने के बाद, पेस्ट को सरसों के तेल में तला जाता है और जब पेस्ट का रंग लाल-सुनहरा हो जाए, तो अन्य सामग्री डालकर एक घंटे तक पकाया जाता है।
- **तुंगताप:** यह मेघालय का एक अनोखा और स्वादिष्ट व्यंजन है, जिसे खासी व्यंजनों में विशेष रूप से पसंद किया जाता है। यह एक किण्वित मछली की चटनी है, जो जाइयूर (Chinese pepper), लाल मिर्च, सोह बैंगन डियेंग (मेघालय में उपलब्ध विशेष प्रकार के बैंगन), लहसुन के साथ किण्वित मछली के मिश्रण से एक विशिष्ट स्वाद प्रदान करती है। तुंगताप अपने तीखे, नमकीन स्वाद के लिए जाना जाता है और इसे अक्सर साइड डिश के रूप में परोसा जाता है।
- **बाँस के व्यंजन:** बाँस के अंकुर एक आम सामग्री हैं, और अनोखे स्वाद के लिए इसे आचार के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इसे मांस के साथ बाँस में भी पकाया जाता है।
- **मशरूम व्यंजन:** स्थानीय मशरूम चावल के विभिन्न व्यंजन और स्थानीय चिकन सूप में लोकप्रिय हैं।

शाकाहारी खान पान – जिंगबाम दिहशा:

खासियों के पारंपरिक भोजन में पौष्टिक नाश्ते जैसे जा शुलिया या चिपचिपा चावल, पु ख्लेन या फ्राइड राइस केक, पु मालोई या भाँप में पकाया हुआ चावल का केक, पुस्ला या पत्ते में लपेटकर भाँप में पकाया हुआ हुआ चावल का केक, पु डोह या शूकर के मांस के टुकड़ों और चावल के आटे के साथ भाँप में पकाया हुआ चावल का केक शामिल हैं। गरमागरम लाल चाय के साथ, यह पौष्टिक व्यंजन सबसे स्वादिष्ट होता है।

- **पुमालोई:** पुमालोई एक खास व्यंजन है और अपनी तरह का अनोखा व्यंजन है। यह चावल के पाउडर को भाँप में पकाकर बनाई गई इडली के समान होता है। इसे चटनी या स्टू के साथ परोसा जाता है। मेघालय में रहने वाले कई लोग इसे खाते हैं, और यह किसी भी समय के लिए एकदम सही है। पुमालोई को गुड़ डालकर मीठे व्यंजन के रूप में भी परोसा जा सकता है।
- **पुख्लेन:** चावल के पाउडर, गुड़ और कभी-कभी नारियल के दूध और तिल से बना एक तला हुआ, मीठा नाश्ता। यह व्यंजन गुड़ और चावल के मिश्रण को कड़ाही में भूनकर गाढ़ा और गाढ़ा पेस्ट बनाकर तैयार किया जाता है। कड़ाही में रखी सामग्री सुनहरे भूरे और कुरकुरे हो जाते हैं। चावल अपने मीठे स्वाद की गवाही दे देता है।

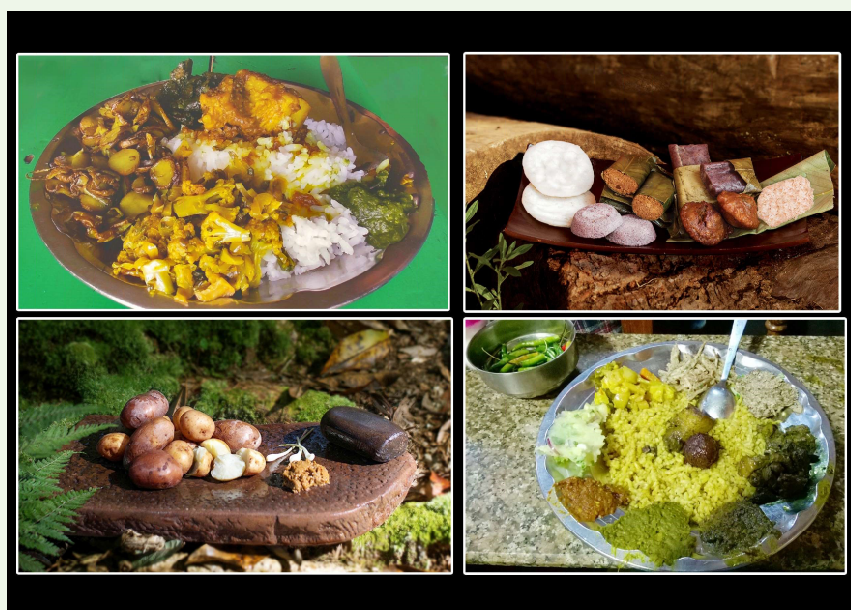
- **पुथारो:** पीसे हुए, चावल के आटे में पानी मिलाकर बनाया जाता है, फिर भाँप में बनाया जाता है। चावल के आटे से बनी एक नरम, स्पंजी रोटी, जिसे अक्सर करी या मांस की झोल के साथ खाया जाता है।
- **पु स्ला:** लामेत के पत्तों में लपेटकर बनाया गया एक उबले हुए चावल एवं गुड़ का केक।

अन्य उल्लेखनीय वस्तुएँ—

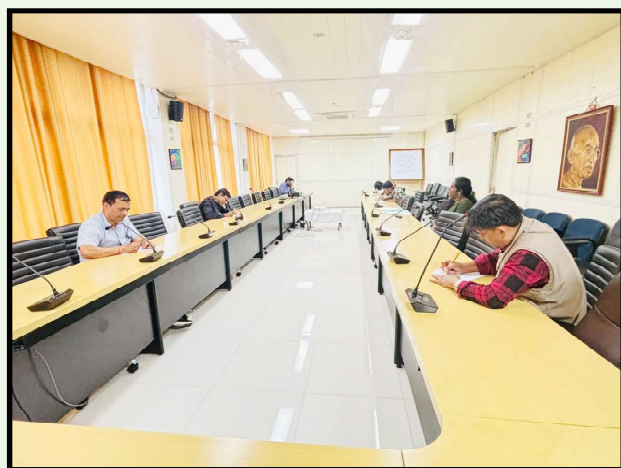
स्थानीय साग: उबले हुए स्थानीय साग एक आम और स्वास्थ्यवर्धक साइड डिश हैं।

क्याद : एक स्थानीय चावल का बियर। क्याद खासी संस्कृति में प्रचलित एक किण्वित चावल की बियर है। स्थानीय लोग सदियों से इसका सेवन करते आ रहे हैं। क्याद, जो बनाने की विधि के आधार पर स्वाद में कड़वी या मीठी हो सकती है।

भोजन एक भाषा है, और मेघालय में, यह गर्मजोशी, सादगी और प्रकृति से गहरे जुड़ाव की बात करता है। चाहे खासी व्यंजनों का तीखा स्वाद हो या जयंतीया और गारो जनजातियों के व्यंजनों का कोमल, सुकून देने वाला स्वाद, मेघालय के व्यंजन हर किसी स्वाद तंत्रिका के लिए कुछ न कुछ ज़रूर पेश करते हैं।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ



वर्ष 2024 एवं 2025 के दौरान आयोजित कार्यशालाएँ



"ऑडिट दिवस 2024" समारोह की झलकियाँ



"ऑडिट दिवस 2024" समारोह की झलकियाँ



"ऑडिट दिवस 2024" समारोह की झलकियाँ



कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पूर्व क्षेत्र एवं
अंतर-क्षेत्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट 2024-25



कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पूर्व क्षेत्र
फुटबॉल टूर्नामेंट 2024-25 में विजेता टीम, कार्यालय महालेखाकार मेघालय, शिलांग



गणतंत्र दिवस 2025 के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय।



सिविल लेखा खेल एवं सांस्कृतिक क्लब द्वारा आयोजित सेवानिवृत्ति समारोह के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिक को उपहार भेंट करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय।



कार्यालय द्वारा आयोजित नेत्र जाँच शिविर



स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ





क्रेम चिम्पे - मेघालय के पूर्वी
जयंतीया पहाड़ी में स्थित गुफा